स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं खाता हूं	हम खाते हैं
तू खाता है	तुम खाते हो।
वह खाता है	वे खाते हैं
स्त्री- मैं खाती हूं	हम खातीं हैं इत्यादि ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं खाता था	हम खाते थे
तू खाता था	तुम खाते थे
वह खाता था	वे खाते थे
स्त्री- मैं खाती थी	हम खातीं थीं इत्यादि ॥

कर्मणि या भावे प्रयोग ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैंने		हमने	
तूने	खाया	तुमने	खाया
उसने		उन्होंने	

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैंने		हमने	
तूने	खाया है	तुमने	खाया है
उसने		उन्होंने	

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने		हमने	
तूने	खाया था	तुमने	खाया था
उसने		उन्होंने	

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

खाइये, खाइयो, खाइयेगा,

धातु साधित नाम ॥

खाना ...... भाववाचक, खाने वाला-खानेहारा-कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

खाता—खाता हुआ ...... वर्त्तमान कालवाचक

खाया—खाया हुआ ...... भूतकाल वाचक ..

धातु साधित अव्यय ॥

खा—खाकर—खाके—खा करके .. .. .. समुच्चयार्थक

खातेही .... तत्काल वाचक

सोना अकर्मक ॥

मुख्यभाग:
- सो ...... शुद्ध धातु
- सोता ... वर्त्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण
- सोया ... भूतकाल वाचक

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल..
स्वार्थभविष्यकाल........
आज्ञार्थवर्त्तमानकाल....
सङ्केतार्थभूतकाल.........
स्वार्थवर्त्तमानकाल ......
स्वार्थ अपूर्णभूत ....

} इसधातुकेइनकालोंकेरूप खा धातुके तुल्य

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुये काल

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया	हम सोये
तू सोया	तुम सोये
वह सोया	वे सोये

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल॥

पुरुष एक वचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया हूं	हम सोये हैं
तू सोया है	तुम सोये हो
वह सोया है	वे सोये हैं

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं सोया था	हम सोये थे
तू सोया था	तुम सोये थे
वह सोया था	वे सोये थे

शेष रूप खा धातु के सदृश होते हैं ॥

इसी रीति से हिन्दी भाषा में जो धातु हैं उनके रूप बनालो और छः धातुओं के भूतकाल वाचक विशेषण के रूप और प्रकार से बनते हैं वे नीचे लिखे हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

धातु	एकवचन		बहुवचन		आदर पूर्वक आज्ञार्थ
	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
जा	गया	गई	गये-गए	गईं	
कर	किया	की	किये	कीं	कीजिये—कीजियो
मर	मुआ	मुई	मुए	मुईं	
हो	हुआ	हुई	हुए	हुईं	
दे	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये—दीजियो
ले	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये—लीजियो

इनमें से होना जाना मरना अकर्मक हैं और करना देना लेना सकर्मक। होना धातु के रूप लिखे हैं—जाना और मरना इनके रूप गिरना धातु के रूपवत् होते हैं—करना देना लेना इनके रूप सकर्मक धातु के रूपवत् होते हैं- जा धातु तो संस्कृत धातु या जाना से निकली और गया

यह रूप संस्कृत **गम** धातु=जाना से बनाहै; भूतकाल वाचक विशेषण **जाया** की योजना केवल संयुक्त क्रिया पद में होती है; जैसा जाया करता है इत्यादि ॥

संस्कृत धातु कृ करनासे हिन्दी धातु **कर** निकली है और इस धातु के भूतकाल वाचक विशेषण और आदर पूर्वक आज्ञार्थ के रूप **करा** वा **करिये** होते हैं, पर ये रूप प्राय: प्रचार में नहीं आते, इनके स्थान में **की** धातु से बने हुए रूप किया कीजिये क्रमसे आते हैं ॥

मरना संस्कृत धातु **मृ**=मरना से निकली है ॥ **मुआ** यह रूप संस्कृत से प्राकृत भाषा के द्वारा आया है, उसमें **ऋ** के बदले **उ** होता है, **मरा** यह भूत काल वाचक धातु साधित विशेषण केवल संयुक्त क्रिया पद में आता है जैसा मरा चाहता है **भया** यह रूप कभी २ हुआ के स्थान में आता है और संस्कृत **भू** धातु से निकला है ॥

२५ पाठ

कर्मवाच्य क्रियापद ॥

प्र० कर्मवाच्य क्रियापदका लक्षण और इसके बनाने की रीतिबतलाइये ?

उ० जो नाम तत्वत: अर्थ में क्रिया का कर्म है जिस पर क्रिया के व्यापार का फल होवे यह जब क्रिया पदका **उद्देश्य**+ हो तब क्रियापद का रूप कर्म वाच्य कहलाता है ॥

कर्मवाच्य क्रियापद हिन्दी में हर जगह नहीं लाते हैं ॥ जहां कर्त्ता ज्ञात न होय वा छिपाहो वहां ऐसे क्रिया पदकी योजना प्राय: करते हैं जैसा, वह मारा गया, देखा जायगा इ० ॥

हिन्दी भाषा में कर्मवाच्य क्रिया पद बनाने की यह रीति है, कि सकर्मक धातुके भूत काल वाचक विशेषण के आगे **जा** धातुके रूप सब काल और अर्थ में जोड़ना; इसभूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणका रूप लिङ्ग वचनानुसार बदलता है; जैसा ॥

+ वाक्य में जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं ॥

मारा जाना ॥

मारा जा····आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन या शुद्ध धातु
मारा जाता··वर्तमानकाल वाचक धातु साधित विशेषण
मारा गया·भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातुसे बने हुए काल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल—विध्यर्थ वर्तमान काल ॥

पुं० एकवचन	पुं० बहुवचन
मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें-जांय
तू मारा जावे-जाय	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे-जाय	वे मारे जावें-जांय
स्त्री- मैं मारी जाऊं	हम मारीजावें इत्यादि ॥

स्वार्थ भविष्यकाल ॥

मैं मारा जाऊंगा	हम मारे जावेंगे-जाएंगे
तू मारा जावेगा	तुम मारे जाओगे
वह मारा जावेगा	वे मारे जावेंगे-जाएंगे
स्त्री- मैं मारी जाऊंगी	हम मारी जावेंगी इ० ॥

आज्ञार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें
तू मारा जा	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे	वे मारे जावें
स्त्री- मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषणसे बने हुए रूप

सङ्केतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह	मारा जाता	हम, तुम, वे	मारे जाते

एकवचन	बहुवचन
स्त्री- मैं मारी जाती	हम मारी जातीं

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

एकवचन	बहुवचन
मैं मारा जाता हूं	हम मारे जाते हैं
तू मारा जाता है	तुम मारे जाते हो
वह मारा जाता है	वे मारे जाते हैं
स्त्री- मैं मारी जाती हूं	हम मारी जातीं हैं इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

एकवचन		बहुवचन	
मैं, तू, वह	मारा जाता था	हम, तुम, वे	मारे जाते थे
स्त्री- मैं मारी जाती थी		हम मारी जातीं थीं इ० ॥	

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूत काल ॥

एकवचन		बहुवचन	
मैं, तू, वह	मारा गया	हम, तुम, वे	मारे गये
स्त्री- मैं मारी गई		हम मारी गईं ॥	

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

एकवचन	बहुवचन
मैं मारा गया हूं	हम मारे गये हैं
तू मारा गया है	तुम मारे गये हो
वह मारा गया है	वे मारे गये हैं
स्त्री- मैं मारी गई हूं	हम मारी गईं हैं

स्वार्थ भूत काल ॥

एकवचन		बहुवचन	
मैं, तू, वह	मारा गया था	हम, तुम, वे	मारे गये थे

स्त्री- मैं मारी गई थी　　　　　　　　　　हम मारी गई थीं

आदर पूर्वक आज्ञार्थ में—मारे जाइये, मारे जाइयेगा

धातु साधित नाम ॥

भाव वाचक ·· ·· ·· ·· मारा जाना

कर्तृ वाचक ·· ·· ·· ·· ·· मार जानेवाला - मारा जाने हारा

धातु साधित विशेषण—मारा जाता, मारा जाता हुआ, मारा गया, मारा गया हुआ ॥

धातु साधित अव्यय ॥

मारा जाकर - मारा जाके - मारा जाकरके - समुच्चयार्थक

मारा जातेही ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· ·· तत्काल बोधक

---

२६ पाठ

क्रियापद के अप्रसिद्धकाल ॥

प्र० आपने क्रियापद के रूप बहुधा सब अर्थ और काल में बनाने की रीति बतलाई - पर संशयार्थ क्रियापद के रूप बनाने के नियम नहींकहे सो कहिये ?

उ० अच्छा प्रश्न किया—सङ्केतार्थ के रूप भी और बनते हैं, उनका प्रकार सुनो ॥

संशयार्थ वर्त्तमान वा भविष्य काल ॥

बोलता होवे - होगा इत्यादि ॥

संशयार्थ भूतकाल ॥

बोला होवे - होगा ॥

सङ्केतार्थ वर्त्तमानकाल ॥

मैं बोलता होऊं - होऊंगा	हम बोलते होवें -होवेंगे
तू बोलता होवे - होवेगा	तुमबोलते होओ- होओगे
वह बोलता होवे - होवेगा	वे बोलते होवें - होवेंगे
स्त्री-मैं बोलती होऊं - होऊंगी	हम बोलती होवें -होवेंगी

संशयार्थ भूतकाल ॥

मैं बोला होऊं - होऊंगा	हम बोले होवें - होवेंगे
तू बोला होवे - होवेगा	तुम बोले होओ - होओगे
वह बोला होवे - होवेगा	वे बोले होवें - होवेंगे
स्त्री-मैं बोली होऊं - होऊंगी	हम बोली होवें - होवेंगी

सङ्केतार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं, तू, वह } बोलता होता	हम, तुम, वे } बोलते होते
स्त्री-मैं बोलती होती	हम बोलतीं होतीं

सङ्केतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह } बोला होता	हम, तुम, वे } बोले होते
स्त्री-मैं बोली होती	हम बोली होतीं इ० ॥

इस प्रकार से सब धातुओं के रूप बनाना ॥

---

२७ पाठ

प्रयोजक क्रिया पद विचार ॥

प्र० यहां तक तो सिद्ध धातु के रूप बनाने की रीति आपने बतला दी वह मैं समझा, अब साधित क्रियापद किस प्रकार से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० हिन्दी भाषा में साधित क्रियापद बहुतसे आते हैं और उनका लक्षण पूर्व्व में किया है अब इन के बनाने के नियम लिखता हूं ॥

१ मुख्य नियम यह है कि मूलधातु को प्रयोजक करना होतो धातु के अन्त्य वर्ण को आ मिलाते हैं, प्रयोजक वा सकर्मक धातु के,

और भी द्विकर्मक वा प्रयोजक करना हो तो मूलधातु के अंत्यवर्ण के आगे वा जोड़ देते हैं; जैसा ॥

मूलधातु, सकर्मक वा	प्रयोजक	द्वितीय प्रयोजक
जल	जलाना	जलवाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
बन	बनाना	बनवाना
बज	बजाना	बजवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
छिप	छिपाना	छिपवाना
मिल	मिलाना	मिलवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
पैर	पैराना	पैरवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
समझ	समझाना	समझवाना
सरक	सरकाना	सरकवाना

२ द्वयक्षर धातुओं के आद्य अक्षर में दीर्घ स्वर होवे तो उसको ह्रस्व कर आ वा वा जोड़ देते हैं, एकाक्षर धातु का स्वरदीर्घ हो तो उसको भी ह्रस्व करके आगे ला वा लवा प्रत्यय जोड़ देते हैं, ह्रस्व करने से आ को अ ई वा ए को इ ऊ वा ओ को उ आदेश क्रम से होते हैं; जैसा

मूल वा सिद्धधातु,	प्रयोजकधातु,	द्वितीयप्रयोजक धातु,
जाग	जगाना	जगवाना
भीग	भिगाना	भिगवाना
भूल	भुलाना	भुलवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना

धो	धुलाना	धुलवाना

३ कई एक अकर्मक धातुओं के आद्य अक्षर में ह्रस्व स्वर होवे तो उसको दीर्घ करदेते हैं, पर यह नियम प्रयोजक से प्रयोजक करना हो तो बे काम है, प्रथम नियम से वा मात्र जोड़ाजाता है; जैसा ॥

कटना	काटना	कटवाना
पलना	पालना	पलवाना
बंधना	बांधना	बंधवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
मरना	मारना	मरवाना

४ कई एक धातुओं के आद्य स्वरको गुण आदेशकर उनमें, ट, क, ह, होवें तो उनके स्थान में, ड, च, ख, आदेश क्रम से होते हैं, द्वितीय प्रयोजक तो प्रथम नियम से होता है; जैसा ॥

बिकना	बेचना	बिकवाना	बिचवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़ाना	फड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़ाना	फुड़वाना
रहना	रखना	रखाना	रखवाना

५ कई एक धातुओं के प्रयोजक के दो दो रूप होते हैं; जैसा

सीखना सिखाना सिखलाना सिखवाना
बैठना बिठाना बैठाना बिठवाना बैठलाना बैठालना बिठालना
देखना दिखाना दिखलाना दिखवाना
रखना रखाना रखवाना इत्यादि ॥

नाम धातु ॥

कई नाम वा विशेषण के अंत्यवर्ण का लोपकर इया प्रत्यय जोड़ देते हैं, और आद्यस्वर ह्रस्व होता है; जैसा पानी-पनियाना-आधा-अधियाना ऐसी धातुओं को नाम धातु कहते हैं ॥

२८ पाठ

संयुक्त क्रियापद विचार ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० संयुक्त क्रियापद उस क्रियापद को कहते हैं जो अर्थ विशेष में प्रधान धातु और सहाय धातुसे बनता है; उसके पांच प्रकारहैं १ गोरवार्थक २ शक्त्यर्थ बोधक ३ समाप्ति वाचक ४ पोन: पुन्य बोधक ५ आशंसार्थक इत्यादि ॥

१ गोरवार्थक क्रियापद उसे कहते हैं जो शुद्ध क्रियापद से अर्थ की विशेषता बताता है और वह प्रधान धातु के आगे डाल दे जा इत्यादि धातुओं के रूप लगाने से बनता है; जेसा मारडालता है, रख देता है, खा जाता हूं, यहां यह स्पष्टहै कि मारता है इससे मारडालता है इसमें अर्थ गोरव है; इन क्रियापदों का यह धर्महै कि अप्रधान धातुका अर्थ तत्वत: कुछ नहीं परन्तु उसके योगसे प्रधान धातुका अर्थ दृढ़ होता है; छोड़देना, फेंकदेना, गिरादेना, काटडालना, तोड़डालना, होजाना, मरजाना ॥

२ शक्त्यर्थ बोधक वा सम्भावनार्थ क्रियापद काम कर सक्ता है ॥

३ समाप्ति वाचक वह कर चुका, कह चुकना, मार चुकना, लेचुकना, लाचुकना इत्यादि ॥

४ पोन: पुन्य बोधक क्रियापद मारा करताहै, मारा करतेहैं, आया करना, बोला करना, किया करना इत्यादि ॥

५ आशंसार्थक क्रियापद बोला चाहता है, किया चाहता है, पढ़ा चाहना, देखा चाहना; यह क्रियापद कभी २ आसन्न भावीक्रिया बतलाता है जेसा मरा चाहता है, गिरा चाहता है इत्यादि ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद के मुख्यभेद और उनका अर्थ में समझा, उसके और कोई भेद हों तो कहिये ?

उ० कभी २ नाम वा विशेषणके आगे धातु जोड़ने से संयुक्त क्रियापदवत् रूप बन जाता है; जेसा मेरे अपराध को क्षमाकर ॥ सातत्य

वाचक क्रियापद वह करता रहता है, वे करते रहतेहैं, मारती जाती है, मारती जाती हैं, लिखता जाना, बोलता रहना, इत्यादि ॥

स्थितिवाचक क्रियापद, गाने आताहै, रोते दौड़ना, हंसते चलना इ० ॥

धातु साधित भाववाचक नाम के समान्य रूप से दे और पा धातुके रूप जोड़ने से अनुमति और लग धातु के रूपोंकी योजना करनेसे प्रारम्भ समझा जाता है; जैसा अनुमति देना-वह मुझे जाने देताहै, उसको काम करने दो ॥

अनुमति पाना-वह लिखने पावे, जाने पाता है ॥
प्रारम्भः ······ वह काम करने लगा, पढ़नेलगी ॥

पर ऐसी जगह में करने काव्याकरन से पदच्छेद करने में ऐसा किया जावे तोभी ठीक है ॥ कभी २ नाम और विशेषण से क्रियापद की योजना करने से नाम साधित क्रियापद होताहै जैसा ग़ोता खाना - ग़ोता मारना, जमा करना वा होना- खड़ा करना इत्यादि ॥ गाड़ी को खड़ी कर ऐसे स्थान में खड़ीकर इतना क्रियापद जानो-कई क्रियापद पुनरुक्ति वाचक होतेहैं जैसा बोलता चालता है, बोल चालकर, समझा बुझाकर इत्यादि ॥

---

२९ पाठ

अव्यय विचार ॥

प्र० अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द को विभक्त्या दिकार्य नहीं होताहै, उसे अविभक्तिक अथवा अव्यय कहते हैं; इसका रूप सदा वैसाही बना रहताहै अर्थात् कुछ भेद नहीं होता और इनका वाक्य रचना में बहुत प्रयोजन पड़ता है; जैसा तब, फिर, यहां इ० ॥

प्र० अव्ययों के भेद कौन २ हैं सो कहिये ?

उ० अव्ययों के चार भेद हैं, क्रिया विशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची, अथवा विस्मयादि बोधक ॥

क्रिया विशेषण अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं और उसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस शब्द से क्रिया के गुण वा प्रकार का बोध होवे, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा धीरे चलता है, बहुत बकता है इत्यादि ॥

सामान्यत: जितने शब्द विशेषण हैं वा विशेषण से होवें वे सब क्रिया विशेषण होते हैं; हिन्दी भाषा में जो क्रिया विशेषण बारम्बार आते हैं वे पांच सर्वनामों से बने हैं, उनका एक कोष्ठक आगे दिया है यह, वह, कौन, जोन, तोन इन पांच सर्वनामों से स्थल वाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाण वाचक, क्रिया विशेषण अव्यय, बनते हैं ॥

	यह	वह	कोन	जोन	तोन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	प्रकारार्थ वा गुणवाचक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	जैसा	तैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

निश्चय वाचक अथवा दृढ़ता बोधक क्रिया विशेषण अभी, कभी, तभी, कधी, इत्यादि हैं ॥

इसी प्रकार से दूसरे वर्ग के क्रिया विशेषणोंके अंत्य **आं** को **ई** आदेश करते हैं और चौथे वर्ग के क्रिया विशेषणोंके अंत्य वर्णके आगे **ही** मिला देते हैं; जैसा यहीं-कहीं-वोंहीं-योंहीं इत्यादि ॥ इन अव्ययों के आगे **लों तक तलक** इत्यादि प्रत्ययों का योग करने से मर्यादा बोधित होती है; जैसा अबलों-अबतक-अबतलक-जबतक- जबतलक इत्यादि ॥ इनमें से कभी २ द्विरुक्ति और कभी २ एक वा दो का योग करने से क्रिया

विशेषण बनजाते हैं जैसा कभी २ जहां तहां, जहां कहीं, जबकब, जब कभी इत्यादि ॥

कई एक क्रिया विशेषणों के साथ निषेधार्थक न की योजना करने से अनिश्चितता वा सर्व व्यापकता के अर्थका बोध होता है; जैसा बरस में मेरे हाथ में कभी न कभी आवेगा, कहीं न कहीं, जब तब इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण अव्ययों के और उदाहरण ॥

प्रकारार्थक—अकस्मात्- अचानक- अर्थात्-केवल- परस्पर-ठीक-तत्वतः विशेषतः शीघ्र-वृथा-निपट-यथार्थ-सच-अवश्य-निःसन्देह-साधारणरूपसे-निःसंशय इत्यादि ॥

स्थलवाचक—आस-पास-आगे-पीछे-निकट-नज़दीक-पार-सर्वत्र-परे इ० ॥

काल वाचक—आज-कल-परसों-नरसों-हररोज़-प्रतिदिन-सदा-बारम्बार तुरन्त-एकदा-फिर-इत्यादि ॥

प्र० कौन २ शब्द वा शब्द समुच्चय अर्थ में क्रिया विशेषण होते हैं और किस रूप से वाक्य में आते हैं ?

उ० कई गुण विशेषण और सर्वनामका प्रथमान्त रूप वा सामान्य रूप क्रिया विशेषण होता है जैसा वह सुन्दरलिखता है अच्छा बोलता है, सीधे चलो, धीरे बोलो, वह अपना काम कैसा करता है इत्यादि ॥

धातु को कर करके इत्यादि प्रत्यय जोड़नेसे जो रूप बनता है उसकी कभी २ क्रिया विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा उसने हंसकर कहा, यहां हंसकर क्रिया विशेषणहै ॥ पंचम्यन्त नामका अर्थ कई जगह क्रिया विशेषणवत् होता है; जैसा जो मनुष्य नीति से चलता है वह सुख पावेगा, दिलसे काम करोगे तो प्रयत्न सफल होगा, किस तरह या किस तरह से काम करोगे इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण के साथ कभी २ विभक्ति प्रत्ययों का योग करदेते हैं; जैसा यहां का रहने वाला, आजका काम, यहां से जाओ, कहां को जाते हो इत्यादि ॥ ऐसे स्थल में षष्ठी प्रत्ययान्त शब्दविशेषणवत् और शेष शब्द क्रिया विशेषणवत् मानना ॥

उभयान्वयी अव्यय विचार ॥ +

प्र० उभयान्वयी अव्यय का क्या लक्षण है और इसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस अव्यय का सम्बन्ध दो शब्दों के अथवा दो वाक्यों के अन्वय की तरफ होता है उसे उभयान्वयी अव्यय कहते हैं; जैसा और,पर, इत्यादि ॥ राम और कृष्ण आये, इस वाक्य में **और** शब्द से राम और कृष्ण इनका अन्वय आगमन क्रिया में है अर्थात् राम आया और कृष्ण भी आया॥

जो उभयान्वयी अव्यय बारम्बार बोलने लिखने में आते हैं, उनका कुछ परिगणन ॥

समुच्चय वाचक ‥‥‥ और - भी

कारण वाचक ‥‥‥ क्योंकि

पक्षान्तर बोधक ‥ पर-परन्तु- किन्तु - वा-या-अथवा- नहींतो- चाहें

सङ्केतार्थक ‥‥‥‥ यदि-जो-तो-तथापि- तोभी

स्वरूप बोधक ‥‥‥ कि

शब्द योगी अव्यय ॥

प्र० शब्दयोगी अव्यय किसे कहते हैं और उनकी योजना - किस रीति से होती है ?

उ० जिस अव्यय से स्थल और काल का बोध होता है और जिस की योजना नाम और सर्वनाम के साथ होनेसे उनका षष्ठ्यन्त सामान्य रूप प्राय: होता है, उसे शब्द योगी अव्यय कहते हैं ॥ हिन्दी भाषा में शब्द योगी अव्यय तो केवल सप्तमी विभक्त्यन्त नाम हैं परन्तु विभक्ति प्रत्यय लुप्त हैं, इस लिये जब इन अव्ययों की योजना की जावे तब पूर्वनाम को और सर्वनाम षष्ठी विभक्ति का के प्रत्यय लगाते हैं और उसके आगे अव्ययों को बोलते; पर बिन वा बिना यह शब्द योगी अव्यय बहुधा नाम के पूर्व आता है; जैसा, मर्दके आगे, लड़के के पास, उसके; समक्ष, बिना स्याही के काम नहीं चलता है ॥

+ उभयान्वयीविचार को शब्द योगी अव्यय विचार के पीछे पढ़ो ॥

शब्द योगी अव्ययों की गणना॥

आगे - अन्दर - भीतर - ऊपर - बाहर - बराबर - बदल - बदले-समीप - बीच - पास - पीछे - तले - सामने - गिर्द - नज़दीक - नीचे-पार - बाद - बिन - बिना - साथ - लिये - मारे-समक्ष ॥

इनमें से कोई २ शब्दयोगी अव्यय सर्वनामों के साथ आवें तो उनका विभक्ति सामान्य रूप होता है, षष्ठी का प्रत्यय नहीं जोड़ते हैं; जैसा जिसलिये, उसबिना; किसलिये इत्यादि ॥

सहित- समेत-सुधा इत्यादि शब्दयोगी अव्यय नाम के साथ आवेंतो नाम से षष्ठी विभक्ति नहीं होती; जैसा बाल गोपाल समेत कृष्ण जी आये, गोपी सहित इत्यादि ॥

शब्द योगी अव्यय नाम वा सर्वनाम के साथ न आवें तो वे क्रिया विशेषण अव्यय होते हैं ॥

केवल प्रयोगी विस्मयादि बोधक अव्यय॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाता है ?

उ० जिन अव्ययों से कहने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मन के भाव समझे जाते हैं, उन्हें केवलप्रयोगीअव्यय कहतेहैंजैसा॥

दुःख और धिक्कार बोधक—बापरे, हाय हाय, अरे रे, ऊः, हाहा,धिक्, दूर दूर, चुप, छिः

हर्ष और धन्यता बोधक—जय जय, शाबाश, वाहवा, धन्य धन्य, वा जी वा, सम्मुखी करण बोधक—अय, ओ, अरे, हे, अबे ॥

साधित शब्द विचार ॥

---

३० पाठ

धातु साधित शब्द ॥

पूर्व में मूल प्रकृति को और साधित शब्दों को विवक्षित रूप बनाने के लिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्य विशेष करना अवश्य है, उसका वर्णन

क्रिया अब मूल सिद्ध शब्दों से जो साधित शब्द बनते हैं उनका व्युत्पत्ति प्रकार लिखता हूं ॥

प्र०. साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द मूल शब्द से प्रत्ययादि लगाके बनते हैं, उनको साधित शब्द कहते हैं ॥

प्र० साधित शब्दों के कितने भेद हैं ?

उ० दो; एक, धातु से बने हुए शब्द इनको संस्कृत में कृदन्तकहते हैं; दूसरा, धातु से अन्य जो शब्द उनसे बने हुए शब्द इनको संस्कृत में तद्धित कहते हैं ॥

प्र० धातु साधित शब्दों के के प्रकार हैं, और वे शब्द किस रीति से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० धातु साधित शब्द तीन प्रकारके हैं नाम, विशेषण, और अव्यय, ये धातु के आगे प्रत्ययों की योजना करने से बनजाते हैं ॥

धातु साधित नाम ॥

धातुके आगे कौन २ प्रत्यय जोड़ने से धातु साधित नाम बनते हैं ?

उ० ना—धातु के आगे यह प्रत्यय लगाने से और कभी २ केवल धातु का शुद्धरूप भाव वाचक नाम होता है; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ० ॥

वाला, हारा—भाववाचक नाम के अंत्य ना को ने में बदल कर आगे इन प्रत्ययों को जोड़ने से कर्तृवाचक होता है; जैसा बोलने वाला; बोलने हारा, करने वाला, करने हारा इत्यादि ॥

अक, वैया—कई धातुओं को ये प्रत्यय मिलाकर कर्तृवाचक बनाते हैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कई धातुओं से भाववाचक आगे लिखेहुए प्रत्यय बहुल+ करके लगाने से होते हैं ॥

\+ कहीं होना और कहीं न होना इसको बहुल कहते हैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधित शब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुला	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट	घबराहट

साधनार्थक नाम ॥

कतर—नी—कतरनी; झाड़—ऊ—झाड़ू; बेल—अन—बेलन इ० ॥

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषण किसरीति से बनता है ?

उ० वर्त्तमान और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों का वर्णन क्रियापद प्रकरण में किया है; उन धातु साधित विशेषणों को वाक्य में योजना करना होवे, तो उनके आगे हो धातु के भूतकाल वाचक विशेषण के रूपों का योग लिङ्ग वचनानुसार करते हैं ॥

पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलताहुआ	बोलतेहुए	बोलतीहुई	बोलतीहुई
बोलाहुआ	बोलेहुए	बोलीहुई	बोलीहुई

सकर्मक धातु से बनाहुआ वर्त्तमान काल वाचक विशेषण कर्तृवाचक होता है; और भूतकाल वाचक विशेषण कर्म वाचक होता है, जैसा करता हुआ मनुष्य, किया हुआ काम इ० ॥

अकर्मक धातु से बनेहुए, वर्त्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक विशेषण सदा कर्तृवाचक होते हैं; जैसा जाता हुआ आदमी, गया हुआ आदमी इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्यय किसरीति से बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु वा उस से कर के करके करकर इत्यादि प्रत्यय जोड़ने से भूतकाल वाचक अव्यय होता है जैसा बोल बोलकर, बोलकर के, बोल के इत्यादि ॥

---

३१ पाठ

धात्वन्य शब्द साधित—साधित नाम ॥

प्र० धातुओं से अन्य जो शब्द उन से और शब्द कैसे बनते हैं यह बतलाइये ?

उ० वान-मान-ई-नाम को ये प्रत्यय मिलाकर स्वामि वाचक शब्द होता है अर्थात् नाम बोधित वस्तु उस प्राणी के पास है; ई प्रत्यय अंत्य स्वरको आदेश होता है; जैसा धनवान, बुद्धिमान, पापी इत्यादि ॥

वाला—नाम को यह प्रत्यय जोड़ने से कर्तृ वाचक वा स्वामि वाचक होता है, आकारान्त पुंलिङ्ग नाम के अंत्य आ को ए आदेश कर प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसा घोड़े वाला, बैलवाला, धनवाला इ० ॥

पूर्वोक्त अर्थमें कई एक नामों से और भी प्रत्यय बहुल करके होते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम	नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम
राह	वर	राहवर	नाल	बन्द	नालबन्द
मशाल	ची	मशालची	ज़मीन	दार	ज़मींदार
लड़का	पन	लड़कपन			
नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द	नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द
लोहा	आर	लोहार	उमेद	वार	उमेदवार
पानी	हारी	पनहारी			
घड़ि	याल	घड़ियाल	इसरीतिसे और भी जानो ॥		

भाव वाचक ॥

विशेषणों से भाव वाचक, करना होतो ये प्रत्यय लगाने से होते हैं ॥

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक	विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक
गरम	ई	गरमी	कम	ती	कमती
बूढ़ा	पा	बुढ़ापा	भला	पन	भलापन
मीठा	स	मिठास	बुरा	ई	बुराई
कड़वा	हट	कड़वाहट	लघु	त्व, ता,	लघुत्व, लघुता
					संस्कृतमें **त्व ता** होते हैं
चतुर	आई	चतुराई			इत्यादि और भी जानो ॥

कहीं २ **य** प्रत्यय होता है वहां आद्य स्वर को वृद्धि और अंत्य स्वरका लोप करके जो अंत्य हल् रहा उसे **य** में जोड़ते हैं, जैसा उदार **य** औदार्य कृपण **य** कार्पण्य-सुन्दर-य-सौन्दर्य, इत्यादि ॥

न्यून वाचक ॥

आकारान्त पुंल्लिङ्ग-शब्द के अन्त **आ** को **ई** आदेश करने से न्यून वाचक होता है, जैसा, रस्सा, रस्सी; लोटा, लोटी; डोला, डोली; छुरा, छुरी इ० ॥

शब्द	प्रत्यय	साधितशब्द
बेटी	इया	बिटिया
बाग़	ईचा	बग़ीचा
तोप	अक	तुपक

साधित विशेषण ॥

नाम से विशेषण बनाने होवें तो आगे लिखे हुए प्रत्यय जोड़ने से हो जाते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा०वि०
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-	अक-इक-	मोहक-धार्मिक
बल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ठ	बलिष्ठ	रङ्ग	ईला	रङ्गीला

घर	ऊ	घरू	पच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	वर	नामवर
धन	वन्त	धनवन्त	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया	लु-	कृपालु, दयालु

---

३२ पाठ

उपसर्ग विचार ॥

प्र० जिस भांति से धातु वा अन्य शब्द के आगे प्रत्ययों की योजना होने से साधित शब्द बनते हैं वैसे शब्द के पूर्व अक्षर वा अक्षर समुच्चय जोड़ने से साधित शब्द होते हैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्न किया धातु वा अन्य शब्द के पूर्व अर्थ रहित एक वर्ण वा वर्ण समुच्चय जोड़ा जाता है, अन्य शब्दके योगसे वे सार्थक होतेहैं, इनको संस्कृत में उपसर्ग कहतेहैं, उपसर्ग के योगसे भिन्न २ अर्थ होते हैं ॥

अ—निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अमृत इ० ॥ शब्दके आदिमें स्वर होवे तो अन् होता है; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप——वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्त्ति इ० ॥

अति——बहुत, दूर अतिदुष्ट, अति कृपण इ० ॥

अधि——अधिक, ऊपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु——पीछे, समान, अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त——भीतर; अन्तर्गत इ० ॥

अभि——तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥

अव——नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार, अवज्ञा इ० ॥

आ——प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि, आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्——ऊपर, उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप——निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु——ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्——कठिन, खराब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि---नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥

निर्---बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥

परा---पीछे, पराजय; पराभव इ० ॥

परि---आसपास; परिपूर्ण; परिभ्रमण इ० ॥

प्रति---विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥

स-सह---सकाम, सलज्ज इ० ॥

वि---वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥

सु-सं---अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, सद्गति इ० ॥

---

१३ पाठ

सामासिक शब्द विचार ॥

प्र० सामासिक शब्द किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एक शब्द बनता है, उसे सामासिक शब्द कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, मा बाप, गिल्लीदण्डा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहां गिल्ली और दण्डा ये दो शब्द मिलकर गिल्लीदण्डा यह शब्द हुआ है, इसीतरह से और भी जानो ॥

इन शब्दों का आपस में जो सम्बन्ध है, उसे समास कहते हैं, जैसा गिल्लीदण्डा यह द्वंद्व समास है; समास से जो बना हुआ शब्द है उसे सामासिक शब्द कहतेहैं, और जिससे समासका अर्थ समझा जावे उसवाक्य को विग्रह कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, देव की जो आज्ञा सो देवाज्ञा ॥

प्र० समास कितने प्रकार के हैं ?

उ० समास छः प्रकार के हैं; द्वंद्व तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु बहुव्रीहि और अव्ययी भाव ॥

द्वंद्व समास ॥

प्र० द्वंद्व समास किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्दों का योग होकर बीचके और शब्द का लोप होवे, उसे द्वंद्व जानो; इस समास में उत्तर शब्द जो लिङ्गवही

सामासिक शब्द का लिङ्ग बना रहता है, राम कृष्ण, मा बाप, इनको पुंल्लिङ्ग जानो; यहां राम और कृष्ण मा और बाप, यह विग्रहहैं ॥

हिन्दी भाषा में द्वंद्व का और भी एक प्रकार है उसे समाहार द्वंद्व कहतें हैं, दो शब्दों के योग से तदन्तर्गत का समावेश होता है, जैसा हाथ पांव टूटे, यहां हाथ और पांव के बीच में जो अवयव हैं उनका भी संग्रह होता है, इसीतरह से सेठसाहूकार, दालरोटी इत्यादि जानो ॥

तत्पुरुष समास ॥

प्र० तत्पुरुष समास किसे कहते हैं और उसके के प्रकार हैं ?

उ० तत्पुरुष समास उसे कहते हैं कि जिसमें उत्तर पद प्रधान हो और उसकी तरफ़ पूर्व शब्द की विभक्ति का सम्बन्ध होकर विभक्ति का लोपहो इसमें द्वितीयादि विभक्तियों के योग से छः प्रकार होते हैं, जैसा

विभक्तिकेतत्पुरुष	विग्रहवाक्य	सिद्धसामासिकशब्द	विभक्तिलोप
२ द्वितीयातत्पुरुष	द्विजकोताड़न	द्विजताड़न	द्वितीयाकालोप
३ तृ- त-	भक्ति से वश्य	भक्तिवश्य	तृ-लो-
४ च- त-	यज्ञकेलियेस्तम्भ	यज्ञस्तम्भ	च-लो-
५ पं- त-	पदसेच्युत	पदच्युत	पं- लो-
६ ष- त-	देवकाभक्त	देवभक्त	ष- लो-
७ स- त-	शास्त्रमेंनिपुण	शास्त्रनिपुण	स- लो-

जब प्रौढ़ भाषा में सर्वनाम का समास होता है, तब उसका रूप संस्कृत के नियम से होजाता है जैसा मेरा जन्म, मज्जन्म; तेरा भाग्य, त्वद्भाग्य; मेरा वस्त्र, मद्वस्त्र; तेरागुण, त्वद्गुण; यहां में तू के **मत् त्वत्** संस्कृत के अनुसार रूप होते हैं इसी तरह से और भी जानो ॥

हिन्दी भाषा में सर्वनामकेरूप संस्कृत के रूपवत् समासमें होते हैं ॥

हिन्दी में सर्वनाम के रूप	संस्कृतमें	सामासिक रूप
वह वे	तत्-चरित्र	तच्चरित्र, तद्धन
मैं हम	मत्-भाग्य	मद्भाग्य, अस्मद्भाग्य
	अस्मत्-	

तू तुम	त्वत्-गृहं युष्मत्	त्वद्गृहं, युष्मद्गृहं
यह ये	एतत्-देशीय	एतद्देशीय

प्र० कर्म धारय समास का लक्षण बतलाइये ?

उ० जहां वक्ता की इच्छा से दोनों शब्दों का भाव तुल्य हो अथवा दोनों का उपमान उपमेय भाव सम्बन्ध होवे अगर विशेष्य विशेषण भाव होवे तो उस समास को कर्म धारय जानो, जैसा ॥

भक्तिमार्ग……भक्तिवहीमार्ग ……भक्तिरूपीमार्ग

चन्द्रमुख चन्द्रवत्मुख उपमान वाची वत् का लोप हुआ

नीलकमल नीलऐसा जो कमल विशेष्य विशेषण भाव समास

द्विगु समास ॥

प्र० द्विगु समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां पूर्व पद संख्यावाची होकर, पूर्वोत्तरपदों से समास किया जाताहै उसे द्विगु समास कहतेहैं, और यह समास बहुधा समाहार अर्थमें आता है; जैसा अष्टाध्यायी, आठ अध्यायों का समूह उसे अष्टाध्यायी कहते हैं, इसी तरह से चतुर्युग, त्रैलोक्य इत्यादि जानो ॥

बहुब्रीहि समास ॥

प्र० बहुब्रीहि समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां दो अथवा अधिक शब्दों के योग से अन्य पदार्थ का बोध होता है, उसे बहुब्रीहि जानो; जैसा चक्रपाणि चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु का बोध होता है; इसी तरह से चतुर्भुज (विष्णु) दशमुख, (रावण) जानो ॥ ये बहु ब्रीहि समास बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, और इनका लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है ॥ यह समास द्वितीयादि छः विभक्तियों में होता है, परंतु हिन्दी में बहुधा तृतीया, षष्ठी, सप्तमी इन विभक्तियों के उदाहरण आते हैं; जैसा जित क्रोध, जीता है क्रोध जिसने, दीर्घ बाहु, दीर्घ अर्थात् बड़े हैं बाहु जिसके,

बहु धनिक नगरी, बहुत हैं धनिक जिस नगरी में, इत्यादि जाने ॥

अव्ययी भाव समास ॥

प्र० अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं ?

उ० जिस में हर, प्रति इत्यादि अव्ययों के साथ दूसरे शब्द से समास होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं; जैसा हर घड़ी, प्रति दिन इत्यादि, और ये शब्द क्रिया विशेषण होते हैं ॥

---

१ पाठ

वाक्य का लक्षण रूप और पृथक्करण ॥

वाक्य विचार ॥

प्र० वाक्य विचार में किस का वर्णन किया जाता है ?

उ० शब्दों की योजना अर्थात् किस स्थल में कौन शब्द किस रीति से रखना चाहिये और उनका परस्पर सम्बन्ध इत्यादिकों का विचार किया जाता है ॥

प्र० वाक्य किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की सुसंबद्ध व्यवस्था जो बात पूरी करे उसे वाक्य कहते हैं; जैसा गोविन्द सोता है, धीमर मछली मारता है ॥

प्र० वाक्य के कौन २ रूप होते हैं ?

उ० वाक्य के पांच प्रकार के रूप होते हैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक+, आज्ञार्थक, विस्मयादि बोधक, इच्छा प्रबोधक; जैसा वह घर को गया, यहां उसका उद्देश्य करके घरका जाना कथन है; तू क्या करता है, यह प्रश्नार्थक है; तू हाट को जा, यह आज्ञार्थक; वाः क्या समयोचित उत्तर दिया, विस्मयादि बोधक; ईश्वर तुम्हें सुखी रक्खे, यह इच्छा प्रबोधक है ॥

प्र० वाक्य में कौन २ शब्द अवश्य हैं ?

+ कथनात्मक और प्रश्नार्थक वाक्यों की रचना कभी २ एकसी ही होती है ॥ निर्णय उसका पूर्वा पर सम्बन्ध से होता है जैसा तुम जाओगे यहां क्या लग सके तो प्रश्न होगा पर दूसरा कोई वाक्य जोड़ा जाय और क्या न लग सके तो कथनात्मक होगा ॥ जैसा तुम जाओगे तो मेरा सन्देशाभी लेजाओ ॥

३० वाक्य में **उद्देश्य** और **विधेय** अवश्य हैं, जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं; और उद्देश्य के विषय में जो बात कही जाय उसे विधेय कहते हैं; जैसा वह आया, इस वाक्य में **वह** उद्देश्य और **आया** विधेय है, इस से स्पष्ट है कि प्रत्येक वाक्य में कम से कम नाम वा नाम समान दूसरा शब्द और क्रियापद ये दो चाहिये, सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये, यह वाक्य की केवल मूल स्थिति समझाई; उद्देश्य और विधेय को बढ़ाना होतो दोनों के साथ गुण बोधक शब्दों का योग करना चाहिये इस प्रकार से वाक्य के चार भाग हुए दो प्रधान और दो अप्रधान ॥

प्रधान		अप्रधान	
उद्देश्य	विधेय	उद्देश्य गुणवाचक	विधेयगुण वाचक
नाम, सर्वनामविशेषण वा कभी२वाक्य	क्रियापद, वा हो धातु के साथ नाम वा विशेषण	विशेषण, वा विशेषणवत् शब्द वा वाक्य	क्रिया विशेषण, वा क्रिया विशेषणवत् शब्द वा वाक्य

उद्देश्य के घरमें नाम, सर्वनाम इत्यादि जो लिखे हैं उनसे यह समझो कि नाम वा सर्वनाम वा विशेषण वा वाक्य उद्देश्य होता है ॥ इसी तरह से और भी जानो ॥

उदाहरण ॥

"चिड़िया उड़ती है .. .. .. यहां नाम उद्देश्य है- ..
"वह,, गया- .. .. .. सर्वनाम- .. ..
"बहुत से,, बुलाये गये थे किन्तु थोड़ेसे,, पसन्द हुए- विशेषण- .. ..
लोगोंको उचित है कि "क्रोध, ईर्षा, छल, लालच,
घमण्ड, चुगली आदि बुराइयों को अपने चित्तमें,
न रहने देवें,, ... वाक्य .. ..

"विद्यावान" पुरुष सब जगह प्रतिष्ठा पाता है- यहां विशेषण उद्देश्य गुण वाचक है· .. ..

जिसके पास विद्या है" वह सब जगह प्रतिष्ठा-पाता है- .. .. विशेषणवत् वाक्य ..

"अच्छे चाल चलनका" मनुष्य सब जगह मान्य-होता है- .. .. विशेषणवत् शब्द ..

"ध्यान पूर्वक" काम करता है- .. .. यहां क्रियाविशेषण विधेय गुण वाचक है .. ..

वह "दिल लगाके" वा "दिलसे" काम करता है क्रिया विशेषणवत् शब्द ..

"जैसा चौकस मनुष्य काम करता है" वैसा वह करता है क्रिया विशेषणवत् वाक्य ..

वह "नहीं देख सकता" .. .. .. यहांक्रियापद विधेय है ..

वह "अंधा है- .. .. .. हो धातुके साथ विशेषण ..

ऐसे स्थल में है को केवल उद्देश्य और विधेय का संयोजक अर्थात् मिलाप करने वाला कहते हैं; पर उस बाग़ में एक वृक्ष है, ऐसे स्थान में है मुख्य क्रियापद वा विधेय होता है, बहुधा है का समावेश विधेय में किया जाता है ॥

वाक्य का अर्थ पूरा होने के लिये जो शब्द अवश्य है, उसे विधेयार्थ पूरक + कहते हैं; ॥

और जिस शब्द से वाक्य के अर्थ का विशेष ज्ञान होता है, उसको विधेयार्थ वर्धक कहते हैं, वाक्य का पृथक्करण इसरीति से होता है; जैसा ॥

• विद्यावान मनुष्य सब जगह प्रतिष्ठा पाता है,

उद्देश्य	विधेय	विधेयार्थपूरक	विधेयार्थ वर्धक
विद्यावान मनुष्य	पाताहै	प्रतिष्ठा	सब जगह

+ सकर्मक क्रियापदकेसाथ कर्म को अवश्य कहना चाहिये ॥ यह कर्म सदा विधेयार्थपूरक होता है ॥

प्र० वाक्य में शब्दों की योजना किस तरह से होती है ?

उ० सामान्यतः वाक्य के अवयवों की व्यवस्था इस तरह से होती है, कि पहिले कर्त्ता वा उद्देश्य, दूसरे विधेय पूरक वा कर्मादि कारक, और सब के पीछे क्रियापद आता है; विशेषण विशेष्य के पूर्व और षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम सम्बन्धी के पूर्व आते हैं ॥ जैसा मैंने शेर को तलवार से खाल के लिये भरका से निकलतेही जङ्गल में मारा, उसने अपने छोटे भाई को मारा यह नियम छोटे वाक्यों के लिये है ॥ कविता में और गद्य में जहां विरोध वा किसी शब्द को ज़ोर से कहना हो तहां यह नियम काम में नहीं आता; जैसा ॥

शकुन्तला नाटक ॥

इनको (अर्थात् दुर्वासा को) छोड़ और किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि अपराधी को आपसे भस्म करदे ॥

रामायण में ॥

रङ्ग भूमि आये द्वौ भाई । अस सुधि सब पुर बासिन पाई ॥
चले सकल गृह काजबिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥

---

२ पाठ

कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप ॥

प्र० कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप किस तरह से होता है ?

उ० वाक्य में नाम वा सर्वनाम वा विशेषण उद्देश्य होवे तो वह सदा प्रथमा विभक्ति में रहता है ॥ साधारणतः हिन्दी में क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष कर्त्ता के लिङ्ग वचन और पुरुष के सदृश होते हैं, पर इस नियम के कई अपवाद हैं उन को ध्यान में रक्खो ॥

(१) आदरार्थ में एक वचनान्त कर्त्ता के साथ बहुवचनान्त क्रियापद आता है ॥

(२) मनुष्य से अन्य जीव वा पदार्थ बोधक शब्द दो अथवा अधिक एक वचन में आवें तो क्रियापद एकवचन में विकल्प से आता है ॥

(३) कर्त्ता भिन्न लिङ्गी होवे तो क्रियापद पुंल्लिङ्ग में आता है, वा सब से निकट जो कर्त्ता होवे तदनुसार होता है ॥

(४) जब क्रियापद सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण से बनाहोवे तब कर्त्ता को तृतीया विभक्तिका प्रत्यय लगाते हैं कर्म प्रथमान्त होवेतो तदनुसार क्रियापद का रूप बनता है, और कर्म द्वितीया विभक्ति में हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष पुंल्लिङ्ग एक वचन में आता है ॥

उदाहरण॥

वह लिखता है, वह लिखती है, वे लिखते हैं, वे गाती हैं, हे सखी हमारी सहेली शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हुआ, और पति भी उसी के समान मिला इससे हमारे मनको सुख हुआ परन्तु फिरभी चिन्ता न मिटी॥

(१) इसकी कुछ चिन्ता मत करो, ऐसे गुणवान मनुष्य कभी निर्लज्ज नहीं होते हैं, अब चिन्ता की बात यह है कि न जानें पिता कण्व इस वृत्तान्त को सुनकर क्या कहेंगे ॥ यहां **मनुष्य** और **पिता** एकवचन हैं तो भी क्रियापद बहुवचन में है ॥

शत्रु का पराजय करके राजा फिर नगर में आये और राज करने लगे ॥

(२) अभी बैल और घोड़ा पहुंचाहै यहां दो कर्त्ता हैं पर क्रियापद एक वचन में है ॥ जन धन स्त्री और राज मेरा क्यों न सब गया आज॥

(३) उसके मा बाप भाई तीनों उसके विवाह की चिन्ता में थे, यहां यद्यपि एक कर्त्ता स्त्री लिङ्ग है तथापि क्रियापद पुंल्लिङ्ग में है, उसकी गाड़ी ऊंट घोड़े हाथी लादे जाते हैं, लड़के लड़कियां वहां दौड़तीं थीं इस वाक्य में क्रियापद निकट कर्त्ता लड़कियां के अनुसार है ॥

(४) हम बन बासियों ने ऐसे भूषण आगे कभी नहीं देखे थे, यह वही मृगछौना है जिसको को तैने पुत्र सम पाला है ॥

वाक्यांश व वाक्य क्रियापदका कर्त्ता होवे तो क्रिया पद तृतीय पुरुष पुंल्लिङ्ग एकवचन में आता है; जैसा इनका थोड़ा सीधा होना भी बहुत है, लोगों को उचित है कि जो काम करना हो उसके गुण दोष पहिले शोच लेवें ॥

क्रियापद के कर्त्ता भिन्न २ पुरुष वाचक होवें तो यह नियम है कि प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम कर्त्ता होवे तो क्रियापद प्रथम पुरुष में चाहिये, द्वितीय और तृतीय पुरुष वाचक कर्त्ता होवे तो क्रियापद द्वितीय पुरुष में चाहिये जैसा हम तुम उस काम को करेंगे, तुम और वे जाओ ॥

---

३ पाठ

विशेष्य विशेषण का मिलाप ॥

प्र० विशेष्य विशेषण की योजना वाक्य में कैसी होती है ?

उ० विशेषण सदा प्रत्यक्ष वा अध्याहृत नाम वा सर्वनाम का गुण बतलाता है और वह प्रायः विशेष्यके पूर्व आताहै, पूर्व में लिखा है कि आकारान्त विशेषणोंकोछोड़ शेष विशेषणोंके रूप में विशेष्यके लिङ्ग वचनानुसार कुछ भेद नहीं होता; आकारान्त विशेषण का लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है, उसका यह स्वभाव है कि विशेष्य पुंल्लिङ्ग बहु वचनान्त होवे वा एक वचन में द्वितीयादि विभक्त्यन्त वा शब्दयोगी अव्यय समेत हो, तो विशेषण के अंत्य **आ** को **ए** आदेश करके सामान्य रूप करते हैं; और विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हो तो **आ** को **ई** आदेश होता है ॥ यह नियम जो शब्द विशेषण के समान अर्थात् सर्वनाम और धातु साधित विशेषण वाक्य में आते हैं उन्हें भी लगता है; जैसा सीधा मनुष्य, सीधे मनुष्य, सीधे मनुष्यों को, सीधी स्त्री या सीधी स्त्रियां, सीधी स्त्रियों को, गङ्गा के तीरपर घर बनायाहै, इस लड़के का पालने हारा कौन है, तुम्हारी घड़ी अच्छी है, उसका मन उदास है, **पांचवां** लड़का, पांचवें लड़के ने, गिराहुआ घर, भरी हुई हवेली ॥

सामान्य नियम ये हैं कि विशेषण विशेष्य के साथ आवे तो उस विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय आं ईं एं ओं वा विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़ते; जैसा अच्छी किताबें, अच्छे लड़कों को ॥ पर विशेष्य प्रत्यक्ष न होवे तो विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय और विभक्ति प्रत्ययका योग

होता है, जैसा ग़रीबों का देना उचित है धनवान का सर्वत्र आदर होता है, साधु अपने समान सबों को मान कर उनपै दया करते हैं ॥

आकारान्त विशेषण के विशेष्यको को प्रत्यय का योग करके विशेषण क्रियापद के साथ जोड़ा जावे तो उसके रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा उसके मुंह को काला करो, पर यह नियम सर्वत्र व्यापक नहीं है, क्योंकि नाम यदि स्त्रीलिङ्ग होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्गी बहुधा रखते हैं यद्यपि उसका योग क्रियापद के साथ किया हो; जैसा लाठी को सीधी कर, रस्सी को लम्बी करो ॥

विशेषण भिन्न लिङ्गी दो वा अधिक नामों का गुण बतावे तो विशेषण पुंल्लिङ्ग नाम के अनुसार होता है, पर अंत्य विशेषण स्त्री लिङ्गी होकर विशेषण के निकट होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्ग में आता है जैसा उसके मा बाप जीते हैं, उसके लड़के लड़कियां अच्छी हैं ॥ परन्तु विशेष्य अप्राणि-वाचक नाम होवे तो विशेषण समीप विशेष्य के अनुसार रहता है; जैसा कपड़े बासन किताबें बहुत अच्छी हैं, कलकी हाट में अनाज तरकारी फल महंगे थे ॥

जब दो अथवा अधिक विशेषण नाम का गुण बतावें और उन में से एक दूसरे का विशेषण हो, तो भी उनमें से आकारान्त विशेषण का रूप विशेष्यके लिङ्ग वचनानुसार होता है; जैसा बड़ा ऊंचा वृक्ष, बड़ी लम्बी रस्सी ॥

---

४ पाठ

कारक विचार ॥

प्र० कारक किसे कहते हैं और वे कितने प्रकार के हैं ?

उ० जिसका क्रिया में अव्यय ही अर्थात् सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं, उसके छः प्रकार हैं; जैसा कर्त्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ॥

प्रथमा विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० प्रथमा विभक्ति कौन अर्थ बतलाती है ?

उ० कर्त्ता, कर्म, विधेय, अवधि, परिमाण इन पांच अर्थों में प्रथमा होती है ॥ कर्त्ता—जो क्रिया के व्यापार को करे उसे कर्त्ता कहते हैं ॥ वह दो प्रकार का है; एक, प्रधान; दूसरा, अप्रधान; जिस कर्त्ताके लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष होता है उसे प्रधान कर्त्ता कहते हैं जैसा गुरू विद्यार्थियों को पढ़ाता है, इसी प्रकार से लड़के रोटी खाते हैं; औरतें नहाती हैं इत्यादि वाक्यों में जानो ॥ अप्रधान कर्त्ता का वर्णन, तृतीया के वर्णन में करेंगे ॥ एकनाम वा सर्व-नाम दो अथवा अधिक क्रियापदों का कर्त्ता होवे तो वह केवल प्रथम क्रियापद के पूर्व आता है, और शेष क्रियापदों के साथ उसका अध्याहार करते हैं; जैसा मैं अपने मालिक के पास जाऊंगा और कहूंगा कि महा-राज मुझ से यह अपराध हुआ है कृपा करके क्षमा कीजिये ॥

कर्म—कर्मवाचक शब्द से प्रथमा विभक्ति होती है; जैसा देवदत्त ने पोथी लिखीहै,सुन्दर लालने किताब बेची, लक्ष्मीने कपड़े धोये इत्यादि; यहां लिखना बेंचना धोना आदि व्यापारों का फल पोथी किताब कपड़ों पर है इसी से वे कर्म हैं और प्रथमा विभक्ति में हैं ॥

विधेय—नाम वा सर्वनाम को उद्देश्य करके उसके विषय में किसी एक अर्थका विधान किया जावे, तो उस विधेयवाचक नाम से प्रथमा होती है; जैसा हीरा लाल ब्राह्मण है, वज़ीरा मुसल्मान है, यहां हीरा लाल वा **वज़ीरा** का उद्देश्य करके **ब्राह्मणत्व** और **मुसल्मानी** का विधान किया है इसलिये ब्राह्मण और मुसल्मान विधेयार्थ में प्रथमा हैं ॥

कई एक अकर्मक, कर्मवाच्य क्रियापद, होना, दिखाना, कहाना आदि अर्थवाचक के साथ प्रथमान्त नाम विधेयका अर्थ पूरा करने के लिये आता है; जैसा पत्थर, लोहा, खड़िया, कोयला, नोन आदि सब धातु विशेष हैं; जो झाड़ होता है उसमें जड़सेही अनेक डालियां फूटती हैं, भाषण से वह बड़ा पण्डित दीखता है प्रथम जीवधारी जो अपने आप हिल चल सकते हैं वे जीव जन्तु कहाते हैं ॥

अवधि--काल वा अन्तर की मर्यादा बतलाना हो तो तद्वाचक नाम

से प्रथमा होती है; जैसा दो महीने वह यहां रहेगा, नागपुर सागर से एक सो पैंतीस कोस दूर है ॥

परिमाण- किसी बस्तु के परिमाण का बोध करना हो, तो परिमाण वाचक से प्रथमा होती है, जैसा दो सेर सुपारी, पांच पसेरी गेहूं ॥ +

द्वितीयादि विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० द्वितीया विभक्ति किससे होती है ?

उ० जो क्रिया का कर्म है उससे द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा गुरु लड़कों को पढ़ाता है, जब कर्म को निश्चित करना हो, तब द्वितीया का प्रत्यय **को** लगाते हैं; जैसा किताब को लावो ॥

अप्राणि वाचक नाम कर्म होवे तो प्रायः उन से द्वितीया के प्रत्यय का योग नहीं करते; जैसा ख़त लिखो, कई एक शब्द ऐसे हैं कि वे निश्चित होंतो भी उनको प्रत्यय लगाना चाहिये; व्यक्ति वाचक अर्थात् विशेष नाम, अधिकारि वाचक, और व्यापार कर्तृ वाचक इत्यादि शब्दों से **को** प्रत्यय का योग करना चाहिये जैसा विष्णु को भेजो, न्यायाधीश को बुलाओ इत्यादि ॥ जब वाक्य में कर्म और संप्रदान दोनों आवें तो कर्म प्रायः प्रथमा में रखते हैं और संप्रदान वाचक से चतुर्थी होती है, संप्रदानार्थक शब्द नाम वा सर्वनाम होवे और कर्म द्वितीयान्त होवे तो नाम के आगे **को** और सर्व नाम के आगे **ए** अथवा **एं** प्रत्यय लगाते हैं; जैसा मर्दको कपड़े इनाम दो, उसने अपने भाई के हिस्से को उसकी बेटी को दिया, मैंने अपनी लड़की को उसे सोंप दिया ॥

गत्यर्थ क्रियापदों के साथ स्थलवाचक नाम से अधिकरणार्थ में द्वितीया होती है ॥ इसी तरह क्रिया के होने का समय जिस नाम से बोधित हो उससे भी द्वियीया होती है ॥ जैसा गङ्गा को गया, दिल्ली को पहुंचा, देश और काल वाचक नाम से द्वितीया के प्रत्यय का लोप करते हैं, परन्तु

\+ दो महीने वहां रहेगा दोसेर सुपारी ऐसे वाक्यों में क्रमसे तक और भर शब्दों का अध्याहार करके कोई २ लोग महीने और सेर इनको सप्तम्यन्त रूप मानलेते हैं ॥

उस के पीछे विशेषण या विशेषण तुल्य शब्द होवे तो उसका सामान्य रूप होता है; जैसा उस दिन वह मेरे घर आया था, उस काल मारू जो बजता था सो तो मेघसा गाजता था ॥

तृतीया विभक्ति ॥

प्र० तृतीया विभक्ति से कौन २ अर्थ बोधित होते हैं ?

उ० तृतीया के मुख्य अर्थ पांच हैं; कर्त्ता, करण, हेतु, अङ्ग विकार, साहित्य ॥ कर्त्ता-तृतीया का प्रत्यय **ने** कर्त्ता से लगाते हैं, जब वाक्य में क्रियापद **बोल** धातुका गण छोड़ शेष सकर्मक धातु के भूतकाल वाचक विशेषण से बना होवे, ऐसे प्रयोग में कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं होता है, इसलिये उसे अप्रधान कर्त्ता कहते हैं; जैसा मैंने कुत्ता देखा ॥ तत्वत: बोलधातु का गण और अपूर्ण भूतकाल को छोड़कर सकर्मक धातु के भूतकाल में जो प्रयोग होते हैं, वहां कर्त्ता को तृतीया विभक्ति का प्रत्यय **ने** जोड़ते हैं, जब ऐसे वाक्य में कर्म प्रथमान्त होता है, तब उसके लिङ्ग वचनानुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन होता है, वह कर्मणि प्रयोग जानो; जैसा हीरा लाल ने पोथी लिखी, उसने घोड़े भेजे ॥ और जब कर्म से **को** प्रत्यय का योग करतेहैं, तब क्रियापद सामान्यत: पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में होता है और उसे भावे प्रयोग कहते हैं; जैसा उसने कुत्ते को देखा, पार्वती ने रोटी को खाया, सोभालाल ने बकरी को मारा, उस लड़के ने चूहे को पकड़ा इत्यादि ॥ अप्रधान कर्त्ता कहां आता है यह विद्यार्थियों को ध्यान में रखना चाहिये ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ अप्रधान कर्त्ता कभी नहीं आता ॥ केवल शुद्ध धातु से और वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जोकाल और अर्थ बनते हैं उनके साथ नहीं आता है फिर वह धातु सकर्मक वा अकर्मक हो ॥ **बोल भूल ला** इत्यादि धातुओं के साथ नहीं आता है; जैसा, वह बोला, वह सन्देशा लाया; उर्दू व्याकरण में लिखा है कि लाना का अर्थ ले आना, यहां अंत्यावयव आ धातु अकर्मक है, इससे यह नियम

समझ में आता है कि जब संयुक्त क्रियापद का अंत्यावयव अकर्मक होवे और सब क्रियापद सकर्मक होवे, तो भी अप्रधान कर्त्ता की योजना नहीं करते हैं; जैसा वे फ़क़ीर खाना खागये हैं, मैं ख़त लिख चुका इत्यादि ॥ दो वाक्य **और** उभयान्वयी अव्यय से जोड़े गयेहों, उनका कर्त्ता एकही होवे, और पहले वाक्य में क्रियापद अकर्मक होवे और दूसरे में क्रियापद सकर्मक होवे तौभी दूसरे वाक्य में अप्रधान कर्त्ता के कहने की कुछ अवश्यकता नहीं है, परन्तु वाक्य की रचना अप्रधान कर्त्ता के अनुसार होती है; जैसा वह झट फिर आई और कहा अर्थात् उसने कहा ॥

जिस वाक्यमें क्रियापद प्रयोजक वा कर्मवाच्य वा अकर्मक होवे, वहां कर्तृवाचक नाम से **से** प्रत्यय होता है; जैसा मैंनेयह काम उससे करवाया, तुझसे रूखी रोटी क्योंकर खाई गई थी, वह मुझसे मारा गया था, यह अपराध उससे हुआ, मुझसे लिखना नहीं बनता है ॥

करण-क्रिया के होने के लिये जो साधन वा जिसके द्वारा क्रिया हो उसको क्रिया के अन्वय से करण कहते हैं; करण वाचक से तृयीया का प्रत्यय लगाते हैं; जैसा सिपाही ने तलवार से चीते को मारा, यहां मारने की क्रिया तलवार के द्वारा हुई इसलिये तलवार करण है और उससे तृतीया का प्रत्यय **से** हुआ; ऐसेही कलम से लिखा, हाथ से उठाया, पांवसे रगड़ा इत्यादि जानो ॥

+

हेतु-कोई क्रिया होनेके वा करने के लिये जो कारण हो उसे हेतु कहते हैं, तद्वाचक शब्दसे तृतीया का **से** प्रत्यय होता है; जैसा आपकी दवासे आराम हुआ, तुम्हारे आने से मेरा काम हुआ; गायन से संतोष होता है, यहां **दवा आना गायन** ये हेतु हैं, उनसे तृतीया हुई ॥

अङ्गविकार-जिस अङ्गावयव में विकार होवे उससे तृतीया होती है; जैसा आंखों से अंधा, पांव से लंगड़ा, कानसे बहरा इत्यादि ॥

साहित्य-क्रिया करने में कर्त्ता के साथ जो रहे उसे साहित्य बोलते

\+ अंगावयव का अर्थ शरीर का भाग ॥

है ॥ और तद्वाचक से तृतीया होती है; जैसा हज़ारी मल्ल एक आदमी से आया, हरमान एक कपड़े से गया, राजा पचास हज़ार फ़ौज से चढ़ आया है इत्यादि ॥

मूल्यवाचक से भी तृतीया होती है; जैसा पांच रुपये से किताब मोल ली इत्यादि ॥

कभी २ क्रिया करने का प्रकार वा रीति बताने के लिये नाम से तृतीया होती है, जैसा, उसको किसी ने नहीं कहा पर अपनेही दिलसे सीखने लगा, अन्तःकरण से काम करो, मेरे तरफ़ क्रोध से देखता है ॥

तृतीया के प्रत्यय का कभी २ लोप होता है; जैसा मैंने उसके हाथ चिट्ठी भेजदी है, न आंखों देखा न कानों सुना, यहां **हाथ से आंखों से कानों से** जानो॥ **पूछ कह** और तदर्थक धातु के साथ नाम वा सर्वनाम से **को** की जगह **से** आता है जैसा राजा से बिनती की, मैं उससे सच कहता था मैंने आपसे पूछा इत्यादि॥

चतुर्थी का वर्णन ॥

प्र० संप्रदान किसको कहते हैं ?

उ० जिसको कुछ दिया जावे अथवा जिसके निमित्त कुछ किया होवे उसे संप्रदान कहते हैं और उससे चतुर्थी होती है; जैसा वह ब्राह्मण को गाय देता है, उसने गोपाल को पोथी दी, गुरूजी स्नानको गये हैं, पीनेको पानी लाओ, वह नाटक देखने को गया है ॥

हो धातु के साथ धातु साधित भाववाचक नाम आकर आवश्यकता बतावे, तो उसके पूर्व कर्तृवाचक शब्द से चतुर्थी होती है; जैसा हमें आज सभा को जाना है, इसको अभी पाठ सीखना है ॥

योग्यता आदि अर्थ बोधक विशेषण और उनके विरुद्ध शब्द वा नमस्कार वा कुशल आदि शब्दों के साथ नाम से चतुर्थी होती है; जैसा लड़कों को उचित है कि माता पिता का आदर करें; लोगोंको योग्य है कि सच्च बोलना, उदारता, दया, पराये दोषका ढकना, सहना, विवेक, उपकार करना आदि अच्छी २ बातों को अङ्गीकारकरें; बड़े आदमियों को

उचित नहीं है कि कभी झूठ बोलें; आपको नमस्कार; आपको कुशल हो ॥

पञ्चमी का वर्णन ॥

प्र० अपादान का क्या अर्थ है और यह कारक किस विभक्ति से जाना जाता है ?

उ० किसी को अवधि मानकर उससे वियोग वा विभाग वा न्यूनाधिक भावादि अर्थका बोध होवे, तो वह अपादान कहाता है और उससे पञ्चमी होती है जैसा गांवसे आया है, घोड़े से गिरपड़ा, गोबिन्द से राम प्रसाद बड़ा है, उस घोड़े से यह घोड़ा छोटा है, आगरे से कलकत्ता पूर्व है इत्यादि ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ उत्पत्ति स्थान वाचक से पञ्चमी होती है; जैसा ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण पैदा हुये, हिमालय पर्वत से गङ्गा निकली है ॥ कभी २ सप्तम्यन्त से पञ्चमी होती है; जैसा बाज़ार में से लाया, घोड़े पैसे गिरपड़ा इत्यादि ॥ वस्तुओं के समूह में से कुछ अंश अलग करना होतो सप्तम्यन्त नाम से पञ्चमी होती है ॥ जैसा उनमें से चार बाक़ी रह-गये, सन्दूक़ में पन्द्रह रुपये रक्खे हैं उनमें से पांच लो ॥

सप्तमी का वर्णन ॥

प्र० सप्तमी विभक्ति का अर्थ क्या है और किससे वह होती है ?

उ० क्रिया का अधिकरण अर्थात् आधार तद्वाचक शब्द से सप्तमी के प्रत्यय में, पै, पर,—होते हैं; जैसा धनमें मन रखता है, घोड़े पै बैठा जाता है, तालाब में स्नान करता है, हाथी पर बैठा है, पढ़ने में ध्यान लगावे तो अच्छा है ॥

कभी २ आधेय वाचक से सप्तमी होती है; जैसा, पांवमें जूता उंगली में अंगूठी इत्यादि ॥

बीच अनुसार विषयक आदि अर्थों में नाम से सप्तमी होतीहै; जैसा इन दोनों में कुछ भेद नहीं है, वह अपने जेठोंकी चाल पर चलेगा, इस बात पर तुम्हारा कहना क्या है ॥

जिस बात में प्राणिवाचक वा अप्राणिवाचक नाम का गुण प्रगट करना;

हो तो तद्वाचक से सप्तमी होती है; जैसा सखा राम भट्ट वेद विद्या में निपुण है, बोलने में कठोर पर हृदय में दयावान है ॥

कभी २ सप्तमी का लोप करते हैं; जैसा गङ्गा के तीर रहता है, घोड़े चढ़ आया पर गधे चढ़ जावेगा ॥

भर यह शब्द नाम के आगे आकर नाम से बोधित वस्तु की समग्रता बताता है; जैसा दिन भर खेलता रहता है, सेर भर घी ॥

सम्बोधन का वर्णन ॥

प्र० सम्बोधन किसको कहते हैं ?

उ० किसी को चिताकर सम्मुख करना, इसे सम्बोधन कहते हैं और इसमें भी प्रथमा होती है उसका फल प्रवृत्ति वा निवृत्ति होता है; जैसा अय गोबिन्द तू पाठशाला को जा, यहां गोबिन्द सम्बोधन है उसे चिताकर पाठशाला को जाने में प्रवृत्त करता है; ऐसे और भी जानो ॥ मोहननलाल, पढ़ने में ध्यान दे, गोपाल, खेलना छोड़; हे राम, मेरा काम कर दे इ० ॥

षष्ठी का वर्णन ॥

प्र० षष्ठी विभक्ति की योजना कहां की जाती है यह नहीं कहा सो मुझे समझाइये ?

उ० जो दो वस्तुओं पर है और दोनों से भिन्न रूप है अर्थात् जो एक शब्द पर दूसरे शब्द का आश्रय बतावे उसे सम्बन्ध कहते हैं। उनमें एक सम्बन्धी है और दूसरा कृत सम्बन्धी, अर्थात् जिस पर दूसरे शब्द का सम्बन्ध है उसे सम्बन्धी कहते हैं, जिसका सम्बन्ध रहता है उसे कृत सम्बन्धी कहते हैं ॥ का की के ये प्रत्यय कृत सम्बन्धी से होते हैं; और कृत सम्बन्धी सम्बन्धी की विशेष्यता बतलाता है उसका अन्वाय सम्बन्धी में है इसी से उसे कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्व नहीं है, और कारकों में नहीं गिना जाता ॥ जैसा, राजा का घोड़ा, यहां कृत सम्बन्धी राजा उससे षष्ठी विभक्ति हुई राजा का सम्बन्ध घोड़े की तरफ़ है ॥ सम्बन्धी पुंल्लिङ्ग प्रथमा के एक वचन में होवे, तो कृतसम्बन्धी से का और पुंल्लिङ्ग होकर बहुवचनान्त

वा द्वितीयादि विभक्त्यन्त होवे वा शब्दयोगी अव्यय के संग आवे, तो कृतसम्बन्धी से के प्रत्यय होता है; जैसा राजा का घोड़ा, राजा के घोड़े, राजा के घोड़े पर, राजा के घोड़ों का, राजा के घोड़ों पर इत्यादि ॥

सम्बन्धी स्त्रीलिङ्ग होवे, तो कृत सम्बन्धी से की प्रत्यय होता है; जैसा राजा की घोड़ी राजा की घोड़ियां इत्यादि ॥ कृत सम्बन्धी सम्बन्धी के पूर्व बहुधा आता है ॥ सम्बन्ध कई प्रकार का होता है ॥ बोध होने के लिये कुछ बताता हूं ॥

वाक्य	सम्बन्ध	वाक्य	सम्बन्ध
राजा की घोड़ी	स्वस्वामिभाव	राजाकासिपाही	सेव्य सेवकभाव
तुलसीदासकीरामायण	कर्तृकर्मभाव	मनसारामकीलड़की	जन्यजनकभाव
चांदीकेतोड़े	द्रव्यजन्यभाव	हाथकीउंगली	अङ्गाङ्गिभाव

कभी २ अधिकरण में षष्ठी होती है---रात का सोया है; दिनका थका हुआ है ॥

कभी २ षष्ठी का अर्थ निमित्त होता है—वैद्य के यहां जाने की सामर्थ्य अबतक नहीं आई; क़ीमत, परिमाण, उमर, मुद्दत, शक्यता, समग्रता, योग्यता आदि अर्थों में षष्ठी की योजना की जाती है ॥ जैसा,

चारआनेकीचीमड़ी }
पांचरुपयेकागोटा } क़ीमत

पन्द्रहबरसकालड़का }
दस बरसकी लड़की }
यहपच्चीसबरसकाहालहै } उमर औरमुद्दत

दो हाथ का कपड़ा }
तीनहाथ का सोंटा } परिमाण

में आज ठहरने का नहीं शक्यता

खेतकाखेत, घरकाघर-समग्रता अर्थात् सब खेत, सब घर

यह बात कहने योग्य नहीं है—योग्यता ॥

शब्द योगी अव्यय नाम के साथ होवे तो षष्ठी का के प्रत्यय लगाते हैं; जैसा पत्थर के नीचे; कभी २ इस प्रत्यय का लोप भी होता है—पत्थर पर, तुम्हारी सहायता बिना यह काम नहीं होगा ॥

जब कोई पदार्थ दो अथवा अधिक मनुष्यों का है यह बतलाना हो, तब अंत्य नाम से षष्ठी होती है; जैसा यह बग़ीचा मोहनलाल शिवप्रसाद और बेनीराम का है॥ सादृश्य, समता, अनुसार, समीपता, योग्यता, आधीनता आदि गुण वाचक विशेषणों के पूर्व शब्द योगी अव्ययवत् नाम से षष्ठी होती है, जैसा, उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है, ज्ञान हीन मनुष्य पशु के समान है, यह धर्मशास्त्र के अनुसार है, वह लड़का राजा के समीप रहता था, पतिव्रता स्त्री का यह धर्म है कि अपने पति के आधीन रहे, ऐसा हार राजा को नज़र करने के योग्य है॥

---

५ पाठ
सर्वनाम॥

प्र० वाक्य में सर्वनाम की योजना किस रीतिसे होती है सो कहिये?

उ० जिन पुरुष वाचक सर्वनामों के लिये क्रियापदोंके पृथक् २ रूप हैं, उन रूपों के साथ सर्वनामों की योजना करना अवश्य नहीं; परन्तु जब विरोध अथवा विशेष्यता बतलाना हो तब उनकी योजना करते हैं, जैसा करता हूं, लिखते हो, यहां पहिले में प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम और दूसरे में द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम का बोध होता है; इसलिये उनका स्पष्ट उच्चारण अवश्य नहीं; क्या तुम हो मैंने नहीं जाना॥

पुरुष वाचक सर्वनामों के बहुवचनान्त रूप आदरार्थ में वा सामान्य संभाषण में एक वचन की जगह आते हैं—हमने तुमको एक बार कह दिया है कि ऐसी बात हमारे पास मत निकालो, हमने सुना कि तुम्हारे भाई आज बम्बई को जाएंगे कृपा करके उनसे कह दो कि हमारे लिये पांच सौ रुपये तक मोतियों की जोड़ी लावें॥

जब बोलने वाला और जिसके साथ वह बोलता है वे दोनों समान पदवी के होवें तब प्रत्येक को अपने विषय में एक वचन बोलना चाहिये और दूसरे को बहुवचन में, बहुत बड़े पदवी का आदमी अपने विषयमें

बोले तो बहुवचन में बोलता है पर यह सभ्यरीति नहीं है और किसी को एक वचन में बोलना अच्छा नहीं है ॥

तीसरे के विषय में बोलना हो और वह अपने से बड़ा होवे तो बहुवचन में और हलका होवे तो एक वचन में बोलना चाहिये, पर समक्ष में बहुवचन में बोलना उचित है और वह अति श्रेष्ठ हो, तो आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं; बराबरी वाले को वा बड़े को समक्ष बोलना हो, तो भी आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं, **आप** जब कर्त्ता हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष बहुवचन में चाहिये ॥

यथार्थ बहुत्व बताना होवे तो सर्वनामों के आगे **लोग** शब्द की योजना करते हैं, जैसा हम लोगों में यह चाल नहीं है, पर तुम लोगों में हो तो करो, आप लोगों को इससे बड़ा लाभ होगा ॥

ईश्वर की प्रार्थना करने में अति आदर बताने के लिये वा अतिनीच मनुष्य को बोलने में वा अत्यन्त स्नेह की जगह द्वितीय पुरुष एकवचन की योजना करते हैं; जैसा हे भगवान तू सब प्राणियों का पालन कर्त्ता है, तूने सब सृष्टि उत्पन्न की इ० ॥ अरे तू कौन है ? बताव जल्द, क्यों यहां आया; बेटा, यहां आ मुझे मुंह चुम्बने दे ॥

भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम वाक्य में कर्ता होवें और उभयान्वयी अव्यय से पृथक् किये गये हों, तो प्रत्येक कर्त्ता के सङ्ग क्रियापद को बोलना चाहिये; जैसा तुम जाओ वा वे जावें, किसी तरह से काम करना चाहिये ॥ वाक्य में भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम कर्त्ता हो तो पहिले प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पश्चात् द्वितीय और उसके पीछे तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम आते हैं; हम तुम क्या कर सकेंगे, तुम और वे वहां जाकर बैठो और पाठ याद करो ॥ सर्वनाम अन्य विभक्ति में आवें तो भी यह नियम जानो; जैसा हमसे और तुमसे कुछ नहीं कह सकते हैं ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम क्रियापद के कर्म होते हैं, तब उनसे सदा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा वह मुझको वा मुझे मारता है, मैं तुझे वा तुझको देता हूं ॥ जब तृतीय पुरुष वाचक सर्व-

नाम सकर्मक क्रियापद का कर्म होता है, तब सामान्यतः उस सर्वनाम से द्वितीया विभक्ति बहुधा होती है; जैसा उसको मारो, उनको बुला दो इ० ॥ **मेरा तेरा तुम्हारा अपना** आदि षष्ठ्यन्त रूपों की योजना जिन रूपों में **का की के** प्रत्यय किये जाते हैं उनके सदृश होती है; जैसा मेरी भूमि, मेरा हाथ, अपने भाइयों से झगड़ा कभी न करना ॥

कर्त्ता और क्रिया को छोड़ जो वाक्यांश उसमें कर्तृ सम्बन्धी षष्ठ्यन्त सर्वनाम की जगह **अपना** इस सर्वनाम का प्रयोग करते हैं; जैसा वह अपना काम करता था अपना= उसका ॥ तुमने अपना नया घर देखा है, अपना = तुम्हारा ॥ मैं यह बात अपने बाप से कहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारे बाप अपने देश को जांयगे; यहां जाने का कर्त्ता बाप और हम हैं, इस कारण से **अपना** की योजना नहीं हुई ॥

और पृथक्ता कहना हो तो कभी २ द्विरुक्ति होती है जैसा वे अपने२ घरको गये ॥ **आप** अर्थात् निजका वाचक सामान्य सर्वनाम का प्रयोग आदरार्थक आप शब्द से भिन्न है, और उसकी योजना तीनों पुरुष और दोनों वचनों में होती है; जैसा मैं आप करूंगा तुम्हारी सहायता न चाहिये; तुम आप क्यों न गये; तुम कुछ मत बोलो, वे आप जांयगे; इन्द्रियों की विद्या में अभ्यास करेंगे तो उन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्ब का भेद आपसे आप खुल जायगा ॥

पूर्व भाग में कह आयेहैं कि सर्वनाम का वचन नाम के वचन के अनुसार होता है फिर वह नाम प्रत्यक्ष हो वा अध्याहृत हो ॥ सर्वनाम नाम के पूर्व विशेषण **सा** आवे और नाम से द्वितीयादि विभक्ति का योग करना हो वा उसके सङ्ग शब्द योगी अव्यय जोड़ना हो, तो सर्वनाम के सामान्य रूप मात्रकी योजना करना चाहिये अर्थात् प्रत्ययों का योग नहीं होता जैसा आप ऐसे धर्मज्ञ जो मुझ अतिथि को मारने को उठे; तुम भले आदमी को झूठ बोलना उचित नहींहै; कदाचित् कोई इस बात का सन्देह करे; पृथ्वी जल और वायु इन तीनों में जीव रहते हैं उन जीवों में मुख्य

दो भेद हैं; जिस धरती में अन्न और तरकारी उपजते हैं उसे खेत कहते हैं. सब पुस्तकें हाथसेही लिखी जाती हैं वा और किसी प्रकार से भी होती हैं, किस मनुष्य को बुलाते हो ॥ क्या सर्वनाम का सामान्य रूप काहे नाम के पीछे विशेषण वत् कभी नहीं आता जैसा काहे के लिये बुलाते हैं, कांहे की घड़ी बनी है ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम से सादृश्यार्थक **सा सी से** प्रत्यय जोड़े जांय तो उनके सामान्य रूप से जोड़ते हैं; जैसा तुझसा चतुर दूसरा नहीं ॥

कभी २ **यह** और **वह** इन एक वचन रूपों की बहु वचन में योजना करते हैं; जैसा यह दोनों भाई न्यायाधीश के पास गये, वह दान धर्म में कुछ पैसा देते हैं ॥

सम्बन्धी सर्वनाम **जो** वा **जौन** और तदर्थवाचक **सो** वा **तौन** वा **वह** अपने २ वाक्य में बहुधा सब से पहिले आते हैं ॥ पूर्व वाक्य में **जो** सर्वनाम का प्रयोग किया जावे, तो उत्तर वाक्य में **सो** वा **वह** सर्वनाम की योजना करनी चाहिये ॥ और जिस वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम होवे वह प्रायः पहिले आता है ॥ उनसे साधित शब्द अर्थात् जैसा, तैसा, जितना आदि शब्दों की योजना पूर्वोक्त प्रकार से होती हैं; जैसा जो घोड़े तुमने भेजे राजा ने बहुत पसन्द किये, जो यत्न करता है सो फल पाता है, जो तुमने कहा सोसब सच है, जहां धन तहां डर, जैसा दोगे वैसा पाओगे, जितना चाहिये तितना लो, चौकस वह आदमी है जो कि काम से पहिले परिणाम को सोचे ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनामों के सङ्ग जो सम्बन्धि सर्वनाम आवे, तो उनके पश्चात् आता है; जैसा तुम जो ग़रीब, हो इतना घमण्ड क्यों करते हो, मैं जो आज दश वर्ष से पढ़ता हूं क्या कुछ नहीं जानता हूं ॥

कभी २ बिना नाम के **जो** की योजना सामान्य अर्थ में करते हैं; जैसा जो ऐसा काम करेगा **सो** दण्ड पावेगा ॥ **कि** यह शब्द **जो** के

साथ बारम्बार आता है परन्तु अर्थ की विशेषता नहीं होती; जैसा जो दुःख कि हम को पहुंचा है दिल में न लावें ॥

जो यह सम्बन्धी सर्वनाम **जो** उभयान्वयी अव्यय अर्थात् **यदि** से भिन्न है और उसका ज्ञान वाक्य में पूर्वापर सम्बन्ध से होता है; जैसा जो आप आज्ञा दें तो मैं उसे पकड़ लाऊं ॥

कौन कोई क्या कुछ इनकी योजना की रीति सर्वनाम प्रकरण में बतलाई है ॥ उन के उदाहरण यहां लिखे जाते हैं जैसा कौन है अर्थात् कौन मनुष्य है, क्या है अर्थात् क्या चीज़ है, कोई उस घरमें रहता है, उस ठेके में कुछ नहीं है, इस ठेके में कुछ है, किसी बन में एक सियार था, राजा से किसी को अधिकार मिलता वा किसी कारण से प्रतिष्ठा बढ़ाई जाती है; कोई सेठ, कोई कङ्गाल, कोई राज सेवक होते हैं परन्तु जहां जङ्गली लोग रहते हैं वहां राजा का कुछ प्रबन्ध नहीं होता; कुछ लोग वहीं जमा हुए थे, क्या निर्बुद्धि आदमी है, वा: क्या बात है ॥

नाना प्रकार बतलाने के लिये **क्या** शब्द की द्विरुक्ति करते हैं जैसा क्या २ चीज़ें आई हैं, क्या २ लोग जमा हुए हैं ॥

कभी २ **क्या** उभयान्वयी भी होता है; जैसा खेत में क्या बाग़ में हुआ यहां **क्या** शब्द का अर्थ **अथवा** है ॥

तुल्यता के अभाव में **कहां** शब्द की योजना करते हैं; जैसा कहां सूर्य्य कहां खद्योत, कहां राजा भोज कहां गङ्गा तेली ॥

निषेधार्थक वा संदेह बोधक अर्थात् जहां प्रश्न सूचित हो ऐसे वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम की जगह कौन और क्या प्रश्नार्थक सर्वनाम आतेहैं, जैसा मैं नहीं जानता हूं कि वह किस जगह गया है, मुझे स्मरण नहीं कि कौन २ आये थे और कौन २ नहीं, वह जानता है कि तुम्हें क्या २ चाहिये अर्थात् तुम्हें जो जो चाहिये सो सब वह जानता है ॥ इसी तरह से उनसे साधित क्रिया विशेषणादिकों की योजना होती है; जैसा न जाने वह कब आवेगा ॥

---

६ पाठ

क्रियापद का अधिकार ॥

प्र० वाक्य में शब्दों पर क्रियापद का अधिकार रहता है इसका अर्थ मैंने नहीं समझा कृपा करके बतलाइये ?

उ० कोई २ क्रियापद ऐसे होते हैं कि उनके साथ दूसरे शब्द अर्थात् नाम वा सर्वनाम किसी एक निश्चित रूप से सदा आते हैं; तुम जानते हो कि सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये और कभी २ संप्रदानार्थक शब्द की योजना करनी चाहिये; जैसा मैंने उसको किताब दी, मैं पलंग पर सोता हूं, मैं रोटी खाता हूं, दूसरे वाक्य में सोता हूं इस क्रियापद के संग पलङ्ग शब्द आया है और अर्थानुरोध से उस नाम से सप्तमी विभक्ति का प्रत्यय जोड़ा गया दूसरी विभक्ति का नहीं, तीसरे वाक्य में **खाता** हूं इस क्रियापद के साथ रोटी इस नाम को कहना अवश्य है नहीं तो अर्थ पूरा न होगा और वह कर्म रूपसे आया है अन्य विभक्ति अर्थात् तृतीयादिकों के प्रत्यय नहीं जोड़ेगये इससे स्पष्ट है कि क्रियापद के अनुरोध से कारकों की योजना होती है ॥

प्र० वाक्य में नाम वा सर्वनाम पर क्रियापद का किसी एक प्रकार का अधिकार होता है यह मैं समझा, अब किस क्रियापद के संग नाम वा सर्वनाम किस रूप से आते हैं यह समझाइये ?

उ० पूर्व में कह आये हैं कि होना दिखाना कहाना आदि अर्थ बोधक अकर्मक और कर्मवाच्य क्रियापद के साथ नाम विधानार्थ प्रथमा में आता है; जैसा रामलाल अब बड़ा महाजन हुआ, जो पुत्र अपने माता पिता की आज्ञा को मानते हैं वे सुपुत्र कहाते हैं ॥

सकर्मक क्रियापद के कर्म के स्थान में नाम अथवा सर्वनाम आता है तब पूर्व नियम से प्रथमा वा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा ऐसे बली यदुकुल में कौन उपजे जिन्होंने सब असुरों समेत महाबली कंस को मारा मेरी बेटियों को रांड़ किया, परंतु आप का यह पुत्र है जो

वेश्याओं के सङ्ग आपकी सम्पति खा गया है, जोहीं आया तोहीं आपने उस के लिये बछड़ु माराहै ॥

प्रयोजक क्रियापद और बतलाना, दिखाना, पहराना आदि सकर्मक क्रियापद के संग दो कारक अर्थात् कर्म और संप्रदान अवश्य आते हैं, उनमें से कर्म प्राय: प्रथमान्त आता है जैसा लड़की को खाना खिलाकर घर को जाओ, उसे यह कपड़ा पहनाओ, उसको एक रुपया दो, तब उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दी ॥

बोलना के साथ नाम से चतुर्थी होती है और कहना के सङ्ग उससे तृतीया का **से** प्रत्यय जोड़ा जाता है- मैं उठके पिता के पास जाऊंगा, और उन से कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्ग के विरुद्ध आपके सामने पाप किया; इस नियम का अपवाद भी कई एक स्थान में देख पड़ता है, जब वह उन के सामने आया तब उनसे एक बात बोल न सका ॥ किसी की स्थिति वा गुण वा मनो विकार बतलाना हो और वह नाम वा सर्व नाम अकर्मक धातु जैसा **आना बनाना भाना चाहना पड़ना पहुंचना रहना सोचना लगना मिलना** और **होना** इनके साथ जब आवे तब उससे चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसा मुझे नींद आती है; मुझे इस बात में सन्देह है; उसे देख नहीं पड़ता; न उन्हें नींद आती थी, न भूख प्यास लगती थी; हमको चाहिये कि वहां जावें; यहां और दूसरे स्थानमें **चाहिये** का अर्थ योग्य है, ऐसा है योग्यार्थक **चाहिये** के योग में चतुर्थी पुरुष वाचक से होती है; जैसा हमको जाना चाहिये, तुमको जाना चाहिये, जब **चाहिये**, का कर्त्ता वाक्य होताहै तब उस वाक्य में क्रियापद विध्यर्थ में आता है; जैसा मुझे चाहिये कि बहुत परिश्रम करूं न कछु वे ले गये न हम लेजायंगे इसलिये सभों को ऐसा काम करना चाहिये कि परलोक में जाकर भी उजले रहें ॥

भीति, छिपाना, लजाना, वियोग, भिन्नता, सावधानी आदि अर्थ-बोधक क्रियापदों के साथ नाम से पञ्चमी होती है; जैसा वह तुम से

डरता है, यह बात मुझसे मत छिपाओ, वह अपनी दशा से लजाता है, मैं जीते जी तुम से अलग कभी न हूंगी, चौकस मनुष्य दुष्टों से सावधान रहता है ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ नाम से सप्तमी भी होती है, किस समय स्थान, वा स्थिति में क्रिया होती है यह बोध जिस नाम से होवे उससे सप्तमी का योग होता है; जैसा वे नगर में चले, दो दिन में वह वहां पहुंचेगा, तुम किस घर में रहते हो, वह पलंग पर सोता है, धोखे में मुझसे यह अपराध हुआ ॥

---

७ पाठ

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

प्र० धातु साधित भाववाचक की योजना वाक्य में किस प्रकार से करनी चाहिये ?

उ० धातु को **ना** जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और वह क्रिया का व्यापार वा स्थिति बतलाता है; धातु साधित भाव वाचक नाम से शब्द योगी अव्यय और विभक्त्यादिकों का योग करना हो, तो आकारान्त पुंल्लिङ्ग नाम के समान होता है; पर इससे तृतीया का **ने** प्रत्यय और सम्बोधन नहीं होता और भाव वाचक सकर्मक धातु से बना हो, तो उसके सङ्ग कर्म आता है; जैसा उसका जाना उचित नहीं है, वह घर देखने को आया है, सहायता करने का समय यही है; पढ़ने के लिये आपके पास आया हूं ॥

निश्चयार्थ में धातु साधित भाव वाचक को **का की के** ये षष्ठी के प्रत्यय जोड़कर उस रूप की विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा यह होने का नहीं, मैं नहीं मानने का, कभी २ संप्रदानार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम से षष्ठी विभक्ति होतीहै; जैसा वहां जाने की आज्ञा दीजिये ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ संप्रदानार्थ में भाववाचक नाम आवे तो उसके **को** प्रत्यय का लोप कभी २ करते हैं; जैसा वे खेलने वा खेलने के

गये, यह घर देखने को आया है, मैं कल हाट में कई चीज़ें मोल लेने और बेचने जाऊंगा ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम वाक्यका उद्देश्य वा विधेय होता है ॥ उद्देश्य वा विधेय के सङ्ग धातु साधित भाव वाचक का रूप आवै तौ कभी २ उसकी योजना विशेषणवत् की जाती है, और विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है ॥ जैसा, लड़कों को कमीनों की सोहबतमें रखना ख़राब करना है, बोलना सहज है पर करना कठिन है, तुम्हारी भाषा बोलनी मैंने नहीं सीखी, तलवार की धार पर उंगली रखनी कठिन है, और जो नल ने निर्दयता का काम किया होता तो दमयन्ती को क्षमा करनी चाहिये ॥ आज्ञार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम की योजना कभी कभी करते हैं और **मत** वा **न** ये निषेधार्थक अव्यय भी उसके साथ आते हैं; जैसा इस बात को मत भूलना, वहां जाकर ऐसा काम न करना ॥

हो धातु के साथ जब भाववाचक का योग करते हैं, तब आवश्यकता व योग्यता का बोध होता है; जैसा निदान एक रोज़ मरना है सब कुछ छोड़ जाना है, तुमको जाना होगा उसको लिखना होगा ॥

भाववाचक नाम के सामान्य रूप के साथ **लग दे पा** धातुओं का योग क्रम से आरम्भ अनुज्ञा देना और पाना इन अर्थों में होता है जैसा वह कहने लगा, वह लिखने लगा, हम को जाने दो, काम करने दो, वे नहीं आने पाते, मैं खेलने नहीं पाता ॥ शक्यर्थ का बोध करनेमें मुख्य धातु से **सक** धातु का योग करते हैं, पर निषेधार्थक अव्यय आवे तो उस धातु के स्थान में कभी २ भाववाचक नामका सामान्य रूप आता है ॥ जैसा वह काम कर सक्ता है, मैं चल न सक्ता था, मैं बोल नहीं सक्ता, मैं नहीं बोल सक्ता हूं ॥

---

८ पाठ

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषणों की योजना किस तरहसे की जाती है?

७० क्रियापद की साधना छोड़ शेष स्थलों में जब धातु साधित विशेषणों का प्रयोग विशेषणवत् किया जाता है, तब उनके रूपों के परे हुआ हुई हुए विशेष्य के अनुसार आते हैं; जैसा है कोई व्रज में मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को रक्खे, बहुत से लड़के वहां खेलते हुए मैंने देखे, मेरी ब्याही हुई बहन ससुर के यहां आज गई ॥

जब धातु साधित विशेषण विशेष्य के परे आता है, तब सहाय रूप हुआ की योजना कभी २ नहीं करते हैं पर विशेष्य के अनुसार उसका रूप होता है; जैसा जितने गोकुल के गोप ग्वाल थे वे भी अपनी नारियों को शिर पर दहेड़ियां लिवाये, भांति भांति के भेष बनाये, नाचते, गाते, नन्द को बधाई देने आये ॥

कभी २ सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण विशेष्य के अनुसार नहीं रहता केवल उसका पुंल्लिङ्ग सामान्य रूप आता है ॥ पर अकर्मक धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण लिङ्ग वचन में विशेष्य के अनुरूप होता है ॥ जैसा, तिनके पीछे मूसल हाथ में लिये एक शूद्र मारता आता है, तुम्हारी लड़की छाता लिये अपने भाई के घर जाती थी, स्त्रियां रङ्ग बरङ्ग बस्त्र पहिने हुए नाचती थीं, वहां किवाड़ खुले पाये भीतर घुसके देखे तो सब सोये पड़े हैं, वह दिक्क हुआ घर आया है, रानी का सिङ्गार बिगड़ा देख एक सहेली बोल उठी ॥

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के पुंल्लिङ्ग सामान्य रूपकी योजना कभी २ नामवत् और कभी २ क्रिया विशेषणवत् करते हैं, और यह रूप सकर्मक धातु से बना होवे तो कर्म भी उसके साथ आता है; जैसा मेरे रहते किसी की इतनी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हें दुःख दे, इस बात के सुनतेही, यह बात सुनतेही, भोर होतेही, शरदृतु जातेही ॥ पुंल्लिङ्ग वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के सामान्य रूप की द्विरुक्ति सातत्य बतलाती है, जैसा हमारा काम होते होते हुआ, जाते जाते एक तालाब के पास पहुंचे ॥

---

९ पाठ

अव्यय विचार ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्ययों की योजना कहां और किस प्रकार से होतीहै?

उ० समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय के पांच प्रकार हैं, वे पूर्व में बतलाये गये हैं ॥

वाक्य में इन अव्ययों का प्रयोजन पड़ता है क्योंकि उनकी योजना करने से वाक्य के अवयवों का मिलाप होता है और उभयान्वयी अव्ययों का प्रयोग करना नहीं पड़ता ॥

उनके रूप से प्रधान क्रिया के पूर्वकाल का बोध होता है इसलिये उन्हें भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय कहने में कुछ दोष नहीं है ॥ इनका सम्बन्ध बहुधा कर्त्ता की तरफ़ और कभी २ कर्म की तरफ़ रहता है; जैसा आज वहां जाकर हमारी किताब लेकर फिर आओ, वह बात सब के मुख से सुनकर बादशाह ने बीरबल से कहा ॥

तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बनाने की रीति पूर्व में बतलाई है, इस अव्यय में गर्भित जो व्यापार वह प्रधान क्रिया के साथही हुआ यह ज्ञान होताहै, इसका अर्थ साधारण रूप से भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय के अर्थ के समान है परन्तु इस से अधिक उद्युक्तता वा जल्दी बूझी जातीहै ॥ पूर्व में कह आये हैं कि इस अव्यय की योजना किंचित् नाम के सदृश होती है, जैसा सुनतेही जरासन्ध अति क्रोध कर सभा में आया और लगा कहने, इतनी बात के सुनतेही हरि कुछ सोच विचार करने लगे, इतनी बात के सुनतेही वह उठ कर चला गया ॥

क्रिया विशेषण, शब्दयोगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण, शब्द योगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्ययों को वाक्य में कहां रखना चाहिये ?

उ० क्रिया विशेषण की योजना वाक्य में जहां चाहिये तहां करते

हैं, परन्तु साधारण नियम यह है कि जिस शब्द का गुण वह बताता है उसके पहिले योजना करनी ठीक है ॥

सर्वनाम **जो** वा **जौन** और **तौन** से साधित क्रिया विशेषणों की योजना उन सर्वनामों की योजना के समान होती है अर्थात् पूर्व वाक्य में **जब, जहां, जैसा** इत्यादि आवें तो अनुक्रम से उत्तर वाक्य में **तब तहां तैसा** इत्यादि आते हैं; जैसा जब सत्सङ्ग से रहित होगे तब दुर्जनों की सङ्गति में पड़ोगे, जैसा अब मरे तैसा तब मरे, जो पानी में पैठा तो इसने चतुराई से वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेजदिये ॥

जबतक जबलौं आदि संयुक्त क्रिया विशेषण बहुधा भूत वा भविष्य कालिक क्रियापदके साथ आते हैं और उस क्रियापदके पूर्व प्राय: निषेधार्थक अव्यय लाते हैं; जैसा जबतक कि मैं न आऊं तब तकवह ठहरे तो तुझे क्या, जब तक मैंने उनसे रुपये की बात नहीं निकाली तब तक वे हर रोज़ हमारे यहां आया करते थे, शब्द योगी अव्यय साधारणत: षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम के पश्चात् रखते हैं, परंतु कभी २ उर्दू भाषा की पद्धति के अनुसार उसके पहिले आते हैं; जैसा आगे घर के, तरफ़ शहर के, उभयान्वयी अव्यय **कि** पूर्व शब्द वा वाक्य का बयान करता है; जैसा उनमें से एक ने रुपये वाले से कहा कि अजी क्यों झगड़ते हो लेखा क्यों नहीं सुनते ॥

पूर्व वाक्य में सङ्केतार्थ अव्यय जो आवे तो उत्तर वाक्य में तो लाना चाहिये; जैसा जो आप फिर कभी ऐसा वचन कहियेगा, **तो** मैं अपना प्राण तज दूंगी ॥ जो तू इसे छोड़ दे तो मैं तुझे एक मोती दूं ॥

---

१० पाठ

द्विरुक्ति विचार ॥

प्र० शब्द को दो बार कहने से क्या समझा जाता है ?

उ० विभाग वा पृथक्ता बताने के लिये संख्या वाचक दो बार लाते हैं; जैसा सब कङ्गालों को दो दो पैसे दो ॥

भूतकाल वाचक विशेषण की द्विरुक्ति से परस्पर क्रिया का बोध होता है और उसमें उत्तर पद बहुधा स्त्रीलिङ्गी रहता है; जैसा मारा मारी, ताना तानी, दाबा दाबी इत्यादि ॥

द्विरुक्ति से कभी २ आधिक्यता बूझी जाती है; जैसा वहां बड़े २ वृक्ष हैं, वह धीरे धीरे चलता है, तुम तो बड़े २ दांत निकालते हो ॥

व्याकरण से वाक्य का पदच्छेद ॥

किसी वाक्य के आरम्भ से अन्त तक हर एक शब्द के रूप की व्याकरण रीति से व्याख्या अर्थात् लिङ्ग वचन विभक्ति आदि कहना और उस वाक्य में उनका परस्पर सम्बन्ध कैसा है यह कथन करना उसे व्याकरण पदच्छेद कहते हैं ॥ इससे वाक्य का यथार्थ ज्ञान होता है; जैसा, (हरिने सिंह मारा) हरिने-इकारान्त पुंल्लिङ्ग विशेषण नामकी तृतीया का एक वचन - कर्त्तरि तृतीया—मारा इस क्रियापदका कर्त्ता—शेर यह सामान्य नाम अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन-कर्मणि प्रथमा मारा इस क्रियापद का कर्म मारा यह क्रियापद मार इस सकर्मक धातु का स्वार्थ सामान्य भूतकाल पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष का एक वचन - इस वाक्य में हरिने-कर्त्ता शेर-कर्म मारा-क्रियापद-कर्मणि प्रयोग ॥

रामने भाई को बुलाया है ॥

रामने-अकारान्त विशेष नाम पुंल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन - बुलाया है इस क्रिया का कर्त्ता ॥

भाई को—ईकारान्त सामान्य नाम पुंल्लिङ्ग द्वितीया का एक वचन कर्म बुलाया है क्रियापद का ॥

बुलाया है—बुला इस सकर्मक धातु का स्वार्थ-आसन्न भूतकाल पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन ॥

राम ने—कर्त्ता—भाई को—कर्म—बुलाया है—क्रियापद—भावेप्रयोग ॥

मैं उठ के अपने पिता के पास जाऊंगा ॥

मैं—प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन कर्त्तरि प्रथमा जाऊंगा इस क्रियापद का कर्त्ता ॥

उठके—समुच्चयार्थक पूर्वकाल वाचक धातु साधित अव्यय ॥

अपने—यह सामान्य सर्वनाम षष्ठी का सामान्य रूप **पास** इस शब्द योगी अव्यय के योग से—पास—शब्द योगी अव्यय ॥

जाऊंगा—यह क्रियापद जो इस अकर्मक धातु का स्वार्थ भविष्य काल पुंल्लिङ्ग प्रथम पुरुष का एकवचन ॥

मैं—कर्त्ता; जाऊंगा—क्रियापद, अकर्मक कर्त्तरिप्रयोग ॥

इतना कह उसने+ तुरन्तही चारों ओरोंके राजाओं को ख़त
लिखे कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ ॥

इतना—दर्शक सर्वनाम पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन अर्थ कर्म कह धातु साधित अव्यय का ॥

कह—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

उसने—तृतीय पुरुष वाचक सर्व नाम पुंल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन लिखे क्रिया का कर्त्ता ॥

तुरन्तही—काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय ॥

चारों—संख्या वाचक विशेषण ओरों का ॥

ओरों के सा०ना०अकारान्त स्त्री० बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप राजा शब्द से विभक्ति का योग होने से ॥

राजाओंको—सा०ना०आकारान्तपुं०चतुर्थीका बहुवचन, अर्थसंप्रदान ॥

ख़त—सा०ना०अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का बहुवचन अर्थ कर्म ॥

लिखे—लिख धा०सकर्मक स्वार्थ सामान्य भूतकाल-पुं०तृ०पु०बहुवचन॥

उसने—कर्त्ता, **ख़त**-कर्म, **लिखे**-क्रियापद ॥ कर्मणि प्रयोग ॥

कि—स्वरूप बोधक उभयान्वयी अव्यय ॥

तुम—द्वि०पु०स०पुंल्लिङ्ग-प्रथमा का बहुवचन **आओ** क्रियापदकाकर्त्ता ॥

अपना—सामान्यस० षष्ठी का बहुवचन सम्बन्ध दल शब्द कीतरफ़, वा सर्वनाम वाचक विशेषण दल शब्द का ॥

+ जरासन्ध ने ॥

टल—सामान्य नाम अकारान्त पुंल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन अर्थ कर्म लो धातु साधित अव्यय का ॥

लेले—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

हमारे—प्रथम पुरुष सर्वनाम पुंल्लिङ्ग बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप **पास** इस शब्द योगी अव्यय के योग से **पास** शब्द योगी अव्यय ॥

आओ—आ धातु अकर्मक आज्ञार्थ वर्त्तमान काल द्वितीय पुरुष बहुवचन **तुम** कर्त्ता **आओ** क्रियापद—अकर्मक कर्त्तरि प्रयोग ॥

---

१ पाठ

छन्दो विचार ॥

प्र० छन्दो बोध का भी वर्णन कीजिये ?

उ० छन्दस् तो अनन्त हैं उन सबों का वर्णन कहां होसक्ता है पर थोड़े प्रसिद्ध २ जोकि बहुधा भाषा में देख पड़ते हैं उनका वर्णन करता हूं सुनो छन्दः **पद्य वृत्त वृत्ति** ये पद्य के नाम हैं ये मात्रा और वर्णके भेद से दो प्रकार के होते हैं जिनमें मात्राओं की गणना होतीहै उन्हें **मात्रा वृत्त** और जिनमें वर्ण अर्थात् अक्षरों की गणना होती है उन्हें **वर्ण वृत्त** कहतेहैं ॥

मात्रा वृत्त का उदाहरण ॥

ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुण आगार ।
केहि की लोभ बिडम्बना कीन्ह न यहि संसार ॥ १ ॥

वर्णवृत्त का उदाहरण ॥

नमामीशमीशाननिर्व्वाणरूपम् विभुंव्यापकम्ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
नजन्निर्गुणन्निर्विकल्पन्निरीहं चिदाकाशमाकाशबासम्भजेऽहम् ॥२ ॥

ह्रस्व और दीर्घ स्वर के भेद से तीन २ अक्षर के ८ गण मगण नगण भगण जगण सगण यगण रगण तगण बनतेहैं लघुका चिन्ह (।) और गुरुका(ऽ)यहहै॥

आदि मध्य अवसान में भजस होहिं गुरु जानु ।
यरत होहिं लघु क्रमहिं सों मन गुरु लघु सब मानु ॥ ३ ॥

मय भन ये सुख देत हैं रस तज ये दुख देत।
सुखद धरत त्यागत दुखद प्रथमहिं लोग सचेत ॥ ४ ॥

मगण (ऽ ऽ ऽ)	श्रीगङ्गा सुख		पद्य के आदि में आने से जो
यगण (। ऽ ऽ)	भवानी सुख		सुखद हैं सो वे सुख और जो
रगण (ऽ । ऽ)	कालिका दुःख		दुःखद हैं वे दुःख देते हैं
सगण (। । ऽ)	मथुरा दुःख		
तगण (ऽ ऽ ।)	श्रीधाम दुःख		
जगण (। ऽ ।)	मुरारि दुःख		
भगण (ऽ । ।)	वामन सुख		
नगण (। । ।)	कलम सुख		

२ पाठ

प्र० मात्रा वृत्त के भेद और भी कहिये ?

उ० दोहा १ सोरठा २ पादाकुलक ३ चोपैया ४ पद्मावती ५ रोला-वृत्त ६ कुण्डलिका ७ बरवा ८ लवायी ९ हरिगीतिका १० आदि मात्रा वृत्त के भेद अनन्त हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—दोहा का लक्षण कहिये ?

उ० दोहा— छन्दस् के प्रथम और तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थ में ग्यारह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयन शर के अस लागि न जाहि ॥ ५ ॥

प्र० २—सोरठा का लक्षण कहिये ?

उ० सोरठा—वृत्त के प्रथम तृतीय पाद में ग्यारह २ और द्वितीय चतुर्थ में तेरह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

आयोरी घनश्याम एक सखी ओचक कह्यो।
विहसत निकसी बाम देखत दुख दूनो भयो ॥ ६ ॥

प्र० ३—पादाकुलक—पादाकुलक का लक्षण कहिये ?

उ० पादाकुलक के कि जिसे भाषामें चोपाई कहते हैं प्रत्येक पद में सोलह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥ ७ ॥

प्र० ४—चौपैया का लक्षण कहिये ?

उ० चौपैया—वृत्त के प्रति चरण में तीस २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

प्रेम परायन अति चित चायन मित्र भाव हिय लेखै ।
ऐसे प्रीतिवन्त प्राणी को कल न परै बिन देखै ॥
मन में स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दरसावै ।
ऐसे मूढ़ मीति की सूरति सपनेहुं मोहिं न भावै ॥ ८ ॥

प्र० ५—पद्मावती किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस २ मात्रा होती हैं उसे पद्मावती वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

विनती प्रभु मेरी मैं मति भोरी नाथ न वर मांगों आना ।
पद पद्म परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जिहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शीश धरी ।
सोई पद पङ्कज जिहि पूजत अजमम शिर धरेउ कृपालु हरी ॥ ९ ॥

प्र० ६—रोलावृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस २ मात्रा और ११ तेरह पर बिश्राम अर्थात् ठहरने का स्थान होता है उसे रोलावृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

हे सीतेश दिनेश वंश पाथोज दिवा कर ।
प्रणत पाल नय पाल दीन बन्धो करुणा कर ॥

अज शङ्कर नुतचरण शरण मांगत मपि मामव ।
बानर धीवर शवर योषि दवने महिमा तव ॥ १० ॥

प्र० ७—कुण्डलिका किसे कहते हैं ?

उ० जिस वृत्तमें प्रथम १ दोहा फिर १ रोला श्रो सब १४४ मात्रा होती हैं उसे कुण्डलिका कहते हैं ॥

यथा ॥

बिना विचारे जो करै सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो जग में होत हंसाय ॥
जग में होत हंसाय चित्त में चैन न आवे ।
खान पान सन्मान राग रङ्ग मन नहिं भावे ॥
कहिगिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है दिन रात्रि कियोजो बिना विचारे ॥

प्र० ८—बरवा छन्दस् का क्या लक्षण है?

उ० जिस के प्रथम और तृतीय पदमें बारह २ और द्वितीय चतुर्थ में सात २ मात्रा होती हैं उसे बरवा छन्दस् कहते हैं ॥

यथा ॥

भज रघुपति पद पङ्कज त्यज सब काम ।
नित रोचन भय मोचन जाकर नाम ॥ १२ ॥

प्र० ९—लवायी वृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस २ मात्रा और अंत्य वर्ण गुरु होते हैं उसे लवायी वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जे चरण शिव अज पूज्य रज शुभ परशि मुनि पतिनी तरी ।
नख निर्गता सुर बन्दिता त्रैलोक्य पावन सुरसरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत बन फिरत कण्टक किन्ह लहे ।
पद कंज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजा महे ॥ १३ ॥

प्र० १०—हरिगीतिका का क्या लक्षण है ?

उ० जिस के प्रत्येक पादमें अट्ठाईस २ मात्रा और १६ बारह मात्रा पर विश्राम और चारों पदों के अन्त में एक २ रगण होता है उसे हरिगीतिका वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नन्दलाल हित नर बाल तुलसी आल बाल सु लीपहीं ।
पुनि दीपबारि संवारि आर्त्तिक मास कार्त्तिक दीपहीं ॥
मन पूतकरि जन दूत खेलि जगाय माधव गावहीं ।
सखि कूबरी फन्द फन्दि के ब्रजचन्द काहनक आवहीं ॥ १४ ॥

३ पाठ

वर्ण वृत्त ॥

प्र० वर्णवृत्त के भी कुछ भेद कृपाकर समझाइये ?

उ० चामरवृत्त १ पञ्चचामर २ तोटकवृत्त ३ भुजङ्ग प्रयात ४ आदि अनेक हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—चामर वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसमें गुरु लघु के क्रम से सोलह २ अक्षर का चरण होता है उसे चामर वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नाम कर्म्म मात मोहिं देहु ते नमस्सदा ।
सो सुनी कही तहीं गहो स्वनाम अर्त्थदा ॥
काल राचिहै तुहीं तुहीं अडील बालिका ।
नाम तोर जे कहैं तिन्हैं करौ स्वकालिका ॥ १५ ॥

प्र० २ — पञ्चचामर का क्या लक्षण है ?

उ० इस के विपरीति अर्थात् लघु गुरु के क्रम से इतनेहीं वर्णों का पञ्च चामर छन्दस् होता है ॥

यथा ॥

नमामि भक्त बत्सलं कृपालु शील कोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥

निकाम श्याम सुन्दरं भवाम्बुनाथ मन्दरम् ।
प्रफुल्ल कंज लोचनम् मदादि दोष मोचनम् ॥ १६ ॥

प्र० ३—तोटक वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसके प्रत्येक पाद में चार २ सगण होतेहैं उसे तोटक वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जय राम रमा रमणं शमनम् भवताप भयाकुल पाहि जनम् ।
अवधेश सुरेश रमेश विभो शरणागत मांगत पाहि प्रभो ॥ १७ ॥

प्र० ४—भुजङ्गप्रयात किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चार २ यगण होते हैं उसे भुजङ्गप्रयात वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

निराकार मोङ्कार मूलन्तुरीय ङ्गिरा ज्ञान गोतीत मीश ङ्गिरीशम्
करालम्महा काल कालङ्कृपालुम् गुणागार संसार पारन्न तोऽहम् ॥ १८ ॥

अधिक भेद और उदाहरण ग्रन्थ की बहुलता से नहीं लिखे ॥

इति

कठिन शब्दोंका कोष ॥

नाo = नाम, विo नाo = विशेष नाम-, पुंo = पुंल्लिङ्ग, स्त्रीo = स्त्रीलिङ्ग, विo = विशेषण, अo = अव्यय, सo नाo = सर्वनाम ॥

अ

अंक नाoपुंo चिन्ह निशानी संख्या

अङ्गाङ्गिभाव नाoपुंo शरीरके अवयवों [का सम्बन्ध

अंत्य विo अन्तका

अंत्याक्षर- नाo पुंo अंत का अक्षर

अकारान्त विo जिस शब्द के अंत में [अकार है

अज्झल नाoपुंo अच और हल् अर्थात् [स्वर और व्यञ्जन

अदर्शन नाo पुंo नहीं देख पड़ना

अधिकार नाoपुंo एक शब्द का संबंध दूसरे शब्दकी तरफ़ होकर एक के रूप में विकार करने की सामर्थ्य [दूसरेमें रहतीहै वह सामर्थ्य

अध्याहार नाo पुंo वाक्यको पूराकरने [केलिये बाहरसे शब्द लाना

अध्याहृत-विo जिसशब्दकाअध्याहार [किया है

अनिश्चितता नाoस्त्रीoजिसकानिश्चय [नहींहै उसकीस्थितिअनिर्णीतपन

अनुकरण नाo पुंo नक़ल

अनुनासिक विo नाकसे जिन अक्षरों [का उच्चारण होता है

अनुभव नाoपुंo मानस ज्ञान

अनुयायी नाoपुंoपीछेजानेवाला, सेवक

अनुरोध नाoपुंoअनुरूपहोना,वा०करना

अनुसार नाoपुंo अनुरूपहोना, अथवा [अनुरूप

अनेकवर्णात्मक विo जिसशब्दमेंएकसे [अधिकवर्ण हैं

अन्य विo दूसरा कोई

अन्वय नाoपुंoवाक्यकेशब्दोंका परस्पर [सम्बन्ध

अपभ्रंश नाo पुंo अपशब्द अशुद्धशब्द

अपवाद नाo पुंo नियमसे बाहरहोने [वालेशब्द इo

अब्ज नाo पुंo कमल

अब्भरण नाo पुंo-पानीका भरना

अभाव नाo पुंo न होना

अर्थानुरोध नाoपुंo अर्थकेअनुरूपहोना

अर्पण नाo पुंo देना

अवयव ना०पुं० अंग वा शरीर का भाग
अवशिष्ट वि० बाकी
अवश्य वि० जो चाहिये
अव्यय जिनशब्दों का कारकत्व नहीं है

आ

आकारान्त वि०जिसकेअंतमेंआकार है
आकृति ना०स्त्री० आकार, सूरत
आकृष्ट वि० खींचा हुआ
आच्छादन ना० पुं० वस्त्र, ढकना
आज्ञार्थ वि० आज्ञाकाबोध जिससे [होता है
आदरार्थवि०जिसमेंप्रतिष्ठापाईजाती है
आदेश जो एक अक्षर के स्थान में [दूसरा अक्षर होजावे
आदान ना० पुं० लेना
आद्य वि० आदिका
आवृत्ति ना० स्त्री० दोहराना
आशंसार्थ वि० जिससे इच्छाका बोध [होता है
आश्रय ना०पुं०आसरा, समीपता
आसन्न वि० नज़दीक का

इ

इकारान्त वि०जिसकेअंतमें इकारहै
इन्द्र ना० पुं० इन्द्र, मालिक, राजा

ई

ईकारान्त वि० जिसशब्दके अंतमें ईहै
ईर्षा ना० स्त्री० डाह द्वेष

उ

उकारान्त वि० जिसकेअंतमें उकार है
उक्त वि० कहा हुआ
उड्डान ना० स्त्री० उडान (संस्कृतमें-नपुंसक है)
उत्कर्ष ना० पुं० बढ़ती
उत्साह ना० पुं० आनन्द, खुशी
उद्गारवाची वि० हर्ष दुखादि भाव [बताने वाला
उपनाम ना० पुं० कुटुम्ब का नाम
उपमान ना०पुं० जिसकी तुल्यताकही [जाय
उपमेय ना० वा०वि० पुं० जो तुल्यहो
उपांत्य ना०पुं० अंत्य अक्षरकापूर्व वर्ण

ऊ

ऊकारान्त वि० जिसकेअन्तमें ऊ होवे
ऊर्ध्व अ० ऊपर
ऊर्मिला ना० स्त्री० विशेषनाम

ऋ

ऋकारान्त वि०जिसकेअन्तमेंऋकार है

ए

एकवर्णात्मक वि० जिस शब्द में एक [अक्षर है
एकारान्त वि० जिसकेअंतमें एकार है
एकैक वि० प्रत्येक
एतच्चन्द्रमण्डल ना०पुं० यहचांदकाघेरा [वा गोला

ऐ

ऐकारान्त वि० जिसशब्दके अंतमें ऐकार है

ऐश्वर्य. ना० पुं० विभव, माहात्म्य, संपदा

ओ

ओकारान्त वि० जिस शब्द के अन्त में
[ओकार है

ओष्ठ ना० पुं० ओंठ

औ

औकारान्त वि० जिस शब्द के अन्तमें
[औकार है

औदार्य ना० पुं० दातापन

क

कंठ ना० पुं० कंठ

करी ना० पुं० हाथी

कर्तृकर्मभाव ना० पुं० करने वाला और
[कियाहुआ काम इनका सम्बन्ध

कर्मवाच्य वि० जिस क्रियापद का कर्म
[उद्देश्य होता है

कविता ना० स्त्री० पद्य श्लोक

काना ना० पुं० अक्षर की खड़ी लकीर
[जैसा ग

कारण ना० पुं० निमित्त

कृति ना० स्त्री० काम, करना

केवल अ० मात्र

कोष्ठक ना० पुं० तख़्ता

क्रियान्वयित्व ना० पुं० क्रियापद के तरफ़
[सम्बन्धरखना

ख

खद्योत ना० पुं० जुगनू

ग

गत्यर्थ वि० जिसका अर्थ गतिहै या जिस
[सेगतिका अर्थपायाजाता है

गद्य ना० पुं० छन्द बिना वाक्य

गर्भित वि० गर्भ अर्थात् पेटमेंरहनेवाला

गुणाधिकार ना० पुं० गुणका अधिकपन

गौरव ना० पुं० बड़ापन, दृढ़ता

च

चक्रपाणि ना० पुं० जिस केहाथमेंचक्र है
[अर्थात् विष्णु

चिन्ह ना० पुं० निशानी

ज

जगदादि ना० पुं० पृथ्वी का आरंभ

जन्य जनक भाव ना० पुं० उत्पन्न करने वाला और उत्पन्न कीहुई चीज़ इनका
[सम्बन्ध

जाति गुणविशिष्टव्यक्ति ना० स्त्री० जाति का गुणजिसव्यक्ति में पायाजाता है
[वह व्यक्ति

ड

डमरू ना० पुं० वाद्य विशेष

डाह ना० पुं० द्वेष

ढ

ढब ना० पुं० चाल, डौल

त

तच्छरीर ना० पुं० उसकी देह ..
तट्टीका ना० पुं० उसकाटीका .
तत्द्वर्णांत वि०वह स्वर्णजिसके अंतमें [है
तदंतर्गत बि०उसकेभीतरगया हुआ..
तद्गत वि० उसमें गयाहुआ
तद्गुण विशिष्ट वि० वहगुणजिसमेंहै.
तद्धवि ना० पुं० उसके यज्ञ काद्रव्य..
तद्भय ना० पुं० उससे डर ..
तद्भावबोधकबि० उसभावकाबोध क- [रने वाला
तन्नेत्र ना० पुं० उसकी आंख ..
तन्मय वि० उससे भराहुआ ..
तन्मात्र अ० केवल वह ..
तल्लीला ना० स्त्री० उसका खेल ..
तवल्कार ना० पुं० तेरा (लिखाहुआ) [त्वकार
तुलना ना० स्त्री० तुला करना, समा- [नता देखना
तृतीयान्त वि० जिसके अन्तमें तृतीया [का प्रत्यय है
तेजोमय वि०तेज वा प्रकाशसेभराहुआ

द

दिगभाग ना० पुं० दिशाकाभाग, देश..
दीर्घ वि० लम्बा ..
दुर्नीति ना० स्त्री० बुरीचाल ..
दृढ़ वि० बलवान् जिसमें ज़ोर होवे..
देवेन्द्र ना० पुं० देवोंकाइन्द्र ..
देव्याश्रय ना०पुं० देवीकी सहायता..
द्रव्य जन्यभाव ना० पुं०चीज़औरउससे [बनाहुआपदार्थ इनका संबंध
द्व्यक्षर वि० जिसमें दो अक्षर हैं ..
द्वितीयान्त वि०जिसके अन्तमें द्वितीया [का प्रत्यय है

ध

धर्माज्ञा ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा ..
धातु साधित वि०धातुसेबनाहुआ ..
धावच्छश: ना० पुं० दौड़नेवालाख़र्गोश
धात्वितर वि० धातुसे इतर वा अन्य
धिक् अ०तुच्छता वा तिरस्कारबोधक [वा तिरस्कार
ध्वनि ना० पुं० स्त्री० आवाज़ ..

न

नायक ना० पुं० मुख्य, मालिक ..
नासिका ना० स्त्री० नाक ..
निकट अ० नज़दीक ..
निकृष्ट अ० वि० ख़राब
नियम ना० पुं० क़ाइदा, निर्णय ना० [पुं० निश्चय इन्साफ़ ..
निर्विकार वि० जिसमें कुछ फेरफार [नहीं हुआ
निवृत्ति ना० स्त्री० रोकना ..
निःशंक वि० निः संदेह ..

निःषठ वि० अति मूर्ख ..
नीरस वि० निरस, फीका ये दोनों [शब्द हिन्दी में ह्रस्व नि से लिखते हैं
नीरोगी वि० चंगा ..
न्यूनता ना० स्त्री० } घटती
न्यूनत्व ना० पुं० }

प

पंक्ति ना० स्त्री० पांति ..
पंचम्यन्त वि० जिसके अन्तमें पंचमीका [प्रत्यय है
परस्पर अ० आपस में ..
परिगणन ना० पुं० } मापना
परिमिति ना० स्त्री० }
पश्चात् अ० पीछेसे ..
पारिभाषिक वि० शास्त्रमें आसानी के [लिये जो संज्ञा मानली है
पावक ना० पुं० आग ..
पितृऋण ना० पुं० पिताका क़र्ज़ ..
पित्राज्ञा ना० स्त्री० बापकी आज्ञा ..
पीताम्बर ना० पुं० जिसका वस्त्र पीला [है अर्थात् विष्णु
पूर्णता ना० स्त्री० पूरापन ..
पूर्ववत् अ० पहिले के समान ..
पूर्वोक्त वि० पहिले कहा हुआ ..
पृथक्करण ना० पुं० अलग २ करना ..
प्रकरण ना० पुं० वर्णन ..
प्रकृति ना० स्त्री० मूलरूप जिससे वि-[भक्त्यादि कार्य होता है
प्रचार ना० पुं० व्यवहार—चाल ..
प्रतिबिम्ब ना० पुं० परछाया ..
प्रतिष्ठा ना० स्त्री० सम्मान ..
प्रत्येक स० ना० हर एक ..
प्रथमान्त वि० जो नाम वा सर्वनाम [प्रथमा विभक्तिमें है
प्रयोजन ना० पुं० काम उपयोग ..
प्रयोग ना० पुं० योजना ..
प्रवृत्ति ना० स्त्री० किसी काममें लगना [वा लगाना वा यत्न
प्रान्त ना० पुं० देशका भाग ..
प्रायः अ० बहुधा अक्सर ..
प्रेरक ना० पुं० कराने वाला ..
प्रौढ़ वि० सभ्य विद्वान लोगोंका ..

ब

बहुधा } अ० बारबार
बहुशः }
बहुत्व } ना० पुं० बहुपन
बाहुल्य }

भ

भरण ना० पुं० भरना ..
भवद्दर्शन ना० पुं० आपका दर्शन ..
भाग ना० पुं० हिस्सह अंश ..
भानु ना० पुं० सूरज ..
भाव ना० पुं० भेद उद्देश ..
भू ना० स्त्री० पृथ्वी ..

भेद ना० पुं० प्रकार ..

म

मध्य ना० पुं० बीच वि० बीचका ..

मनोभाव ना०पुं० मनकीअवस्था इच्छा

मन्वन्तर ना० पुं० दो मनुओं के बीच [का काल वा अन्तर

मर्यादा ना० स्त्री० हद्द ..

महद्भाग्य ना० पुं० बड़ा नसीब ..

महर्षि ना० पुं० बड़ाऋषि ..

महैश्वर्य ना० पुं० बड़ी संपत् ..

माहात्म्य ना० पुं० मनका बड़ापन

मिश्रित वि० दूसरे से मिला हुआ ..

मूलस्थिति ना०स्त्री० पहली स्थिति ..

मृत्युञ्जय ना० पुं० महादेव ..

य

यथाक्रम अ० जैसाक्रमहै वैसे क्रमसे ..

यथायोग्य अ० जैसा चाहिये वैसा ..

युक्त वि० जुड़ा हुआ उचित ..

योग ना० पुं० जोड़ना ..

योग्यता ना० स्त्री० उचितता ..

र

रमेश ना०स्त्री० लक्ष्मी का पतिविष्णु

रूपान्तर ना० पुं० दूसरा रूप ..

ल

लक्षण ना० पुं० व्याख्या, बयान, वर्णन

लाकृति ना० स्त्री० आकार रूप ..

व

वत् अ० समान ..

वक्ष्यमाण वि० जो कहा जायगा ..

वस्तुत: अ० तत्वत: ..

वागीश ना० पुं० अच्छा बोलने वाला [बृहस्पति

वाग्घरि ना० पुं० (वाचा और हरि) [वाचा को हरण करने वाला

वाङ्मन ना० पुं० वाचा और मन ..

विकार ना० पुं० फ़रक़ बदल ..

विकृति वि० बदला हुआ ..

विकीर्ण वि० फैलाया हुआ ..

विजातीय वि० भिन्न जातका ..

विधवा ना० पुं० जिसकापतिनहीं, रांड़

विधेयार्थपूरक ना० पुं० वा वि० विधेय [का अर्थ पूरा करने वाला

विधेयार्थवर्धक ना०पुं०वि० विधेय का [अर्थ बढ़ाने वाला

विभक्त्यन्त वि०जिस नामवासर्वनामके [अन्तमें विभक्ति का प्रत्ययहोवे

विवक्षित वि० इष्ट

विवेचन ना० पुं० विचार ..

विषय ना० पुं० बात ..

विस्मयादि बोधक वि० आश्चर्यादि [मनोभावों का वाचक

वृत्ति ना०स्त्री० आचरण, स्वभाव, धंदा

वैयाकरणलोग वि—ब—व व्याकरण [जानने वाले लोग
व्यतिरिक्त वि० अन्य
व्यापकता ना० स्त्री० फैलाव
व्यापारार्थ वि० जिसका अर्थ व्यापार है
व्युत्पत्ति ना० स्त्री० उत्पत्ति

श

शक्यता ना० स्त्री० होने और करने की [योग्यता वा संभव
शयन ना० पुं० सोना वा बिछौना
शालक ना० पुं० साला
शेष वि० बाकी
श्रुति वि० सुनाहुआ

ष

षड्हृदय ना० पुं० छह हृदय
षण्मास ना० पुं० छः मास
षष्ठ वि० छठवां
षष्ठ्यन्त वि० जिसके अंतमें षष्ठीका प्रत्यय [होवे

स

संकेत ना० पुं० शर्त
संपात ना० पुं० गिरना
संयुक्त वि० जुड़ाहुआ
संयोग ना० पुं० जोड़
संशय ना० पुं० सन्देह
संस्कृतानभिज्ञ वि० संस्कृत भाषा न [जानने वाले लोग
सजातीय वि० एक जातका
सच्छास्त्र ना० पुं० अच्छाशास्त्र
सदृश वि० समान
संधि ना० स्त्री० मिलाप
सतेज वि० तेज सहित
सन्मानार्थ वि० जिससे प्रतिष्ठा पाई [जाती है
सप्तम्यन्त वि० जिसके अंतमें सप्तमीका [प्रत्यय है
समग्रता ना० स्त्री० संपूर्णता
समता ना० स्त्री० समानपन
समावेश ना० पुं० संग्रह
समुच्चयार्थक वि० जिससे शब्दों का वा [वाक्यों का मिलाप होता है
समूह ना० पुं० जमा वा जातिगण
सविकार वि० जिसके रूपमें विभक्ति आदि [कार्यसे बदल हुई है
सशब्द योगिक वि० शब्दयोगी अव्यय [सहित
सहाय ना० पुं० जो मदद देता है
सातत्य ना० पुं० सातत्तपन चलतारहता [होता जाना
साधनक्रिया ना० स्त्री० रूपबनानेका [काम
सामान्यत: ना० स्त्री० साधारण पन
सार्थ वि० जिसमें अर्थ पाया जाय

सिद्धरूप ना० पुं० पहिलेहीसे जिसका
[रूपबना है दूसरे शब्दसेनहीं
सीताश्रय ना० पुं० सीताका आश्रय
सुसंबद्ध वि० अच्छीतरहजिसकीरचना
[की गई है
सूचित वि० बोधित
सेव्यसेवक भाव ना० पुं०मालिकचाकर
[का सम्बन्ध

स्थल ना० पुं० स्थान जगह
स्थिति ना० स्त्री० रहना
स्पर्धा ना० स्त्री० द्वेष
स्पष्टी करणार्थ अ०स्पष्ट करनेकेलिये
स्वस्वामि भाव, मालिक और उस
[चीज़ का सम्बन
स्ववर्गोक्त वि० अपनेवर्ग का कहाहु
[स्था

इति